॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अक्टूबर, 2015 वर्ष 18, अंक 10
विक्रमी सम्वत् 2072
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

राष्ट्रधर्म के पुरस्कर्ता श्रीराम

❑ स्व. क्षितीष वेदालंकार

हमने योगेश्वर श्रीकृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को सदा राष्ट्र पुरुष कहा हैं राष्ट्र धर्म द्वारा राष्ट्रीय विजय का जैसा अद्भुत उदाहरण इन दोनों महापुरुषों ने प्रस्तुत किया, ऐसा इतिहास के पृष्ठों में दुर्लभ है। अपने चरित्र के द्वारा वे केवल सामान्य मनुष्य नहीं रहे, प्रत्युत लोकोत्तर चरित्र के भी धनी बनकर व्यष्टि से उठकर समष्टि के और समस्त राष्ट्र के प्रतीक बन गये। यही उनका देवत्व है। श्रद्धालु जनों ने इसी देवत्व को ईश्वरत्व की कोटि तक पहुंचा दिया और यह मान लिया कि उनके जैसा अलौकिक पुरुषार्थ मानव के वश का नहीं है। इस भावना से भक्ति का विस्तार तो हो सकता है, परन्तु जीवन में पुरुषार्थ की प्रेरणा नहीं मिल सकती।

महर्षि वाल्मीकि ने राम के गुणों का वर्णन करते हुए जहाँ उन्हें साक्षात धर्म का अवतार, वेद वेदांग-तत्वज्ञ और रघुवंश शिरोमणि कहा है, वहां उनकी प्रशस्ति में यह भी कहा है-

समुद्र इस गांभीर्ये धैर्येण हिमवानिब!

अर्थात् वे गंभीरता में समुद्र के समान हैं और धैर्य में हिमाचल के समान हैं। इस एक ही श्लोक में हिमालय और समुद्र के एक साथ वर्णन में हमें यह व्यंजना प्रतीत होती है कि महर्षि वाल्मीकि अपनी रामायण में जिस व्यक्ति का वर्णन कर रहे हैं, वह केवल दशरथ-सुत और अयोध्या का राजकुमार नहीं है, बल्कि वह हिमालय से लेकर समुद्र पर्यन्त इस समस्त वाल्मीकि को अभीष्ट होता तो कदाचित वे उपमा के रूप में हिमाचलय और समुद्र का उल्लेख न करते, क्योंकि अयोध्या के पास न हिमालय है, न समुद्र है। हिमालय और समुद्र दोनों प्रकृति की इतनी विराट रचनाएं हैं, कि न तो इन्हें अनायास किसी एक

व्यक्ति की श्रेष्ठता के लिए प्रस्तुत किया जाना चाहिए और न ही किसी लघु भूखण्ड के लिए। छोटे-छोटे प्रदेशों पर राज्य करने वाले राजाओं के लिए तो हरगिज नहीं। हिमालय और समुद्र का एक साथ वर्णन आते ही तुरन्त उत्तर से दक्षिण तक फैले आर्यावर्त का विशाल भौगोलिक भूखण्ड सामने आता है और ऋषि वाल्मीकि को यही अभिप्रेत है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि श्रीकृष्ण ने यदि इस आर्यावर्त को पश्चिमी छोर से लेकर पूर्वी छोर तक-अर्थात् समुद्र-तटवर्ती द्वारिका से लेकर बर्मा की सीमा से लगे ठेठ मणिपुर तक-इस देश को एक सूत्र में आबद्ध किया था तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने उत्तर से दक्षिण तक-अर्थात् नेपाल के सीमावर्ती प्रदेश जनकपुर से लेकर ठेठ दक्षिण में हिन्द महासागर के अन्तर्गत लंका के टापू तक इस देश को एक दृढ़ सूत्र में आबद्ध किया। इन दोनों महापुरुषों का यही राष्ट्र पुरुषत्व है। इतना बड़ा चमत्कार आज तक किसी अन्य महापुरुष के द्वारा सम्पन्न नहीं हुआ। इसलिए भारत का जन-जन इन दोनों महापुरुषों का नाम आते ही भक्ति और श्रद्धा से विह्वल हो उठता है तो आश्चर्य ही क्या है।

जब यह आर्यावर्त चारों ओर राक्षस साम्राज्य से घिरा हुआ था तब राम ने ऋषियों के मार्ग दर्शन में राक्षसों के साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करके आर्य राज्य का विस्तार किया और उत्तर से दक्षिण तक आर्यो की सत्ता को कण्टक-विहीन बना दिया। उस समय पूर्व में ताड़का और सुबाहु, उत्तर पश्चिम में बाणासुर और दक्षिण में स्वयं (शेष पृष्ठ 18 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी का
आर्य समाज/डी.ए.वी. द्वारा अभिनन्दन

डी.ए.वी. रूपी शरीर में पूनम सूरी जी आत्मा बनकर आएं। – महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

महामहिम राज्यपाल आर्य समाज/डी.ए.वी. परिवार के ही सदस्य – डॉ. पूनम सूरी

5 सितम्बर, 2015 को शिक्षक-दिवस के अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी ने संयुक्त रूप से शिमला के पीटर हाफ सभागार में हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर सभा एवं डी.ए.वी. के पदाधिकारी, निदेशकों एवं पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़ में स्थित डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्यो, क्षेत्रीय निदेशकों और अध्यापकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी को अभिनन्दन पत्र भेंट करते प्रादेशिक सभा एवम् डी.ए.वी. के प्रधान डॉ. श्री पूनम सूरी जी।

महामहिम राज्यपाल के पीटर हाफ पहुंचने पर हिमाचल प्रदेश के लोक-वाद्यों की मधुर स्वरलहरियों एवं वेद-मन्त्रोच्चारण सहित पारंपरिक ढंग से स्वागत किया, और उन्होंने इस अवसर पर विशेष रूप से तैयार की गई एक प्रदर्शनी का अवलोकन किया जिसमें आर्य समाज, डी.ए.वी. और राष्ट्र के महापुरुषों सहित वैदिक विचारधारा और समाज-कल्याण से संबंधित विभिन्न विषयों पर तैयार किए हुए उल्लेखों और चित्रों का पूर्ण मनोयागे से आनन्द लिया।

कार्यक्रम का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ, जिसके बाद डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लक्कड़ बाजार, शिमला की छात्राओं ने संगठन-सूक्त तथा शिव संकल्प के मन्त्रों का भावगीतों सहित अत्यंत प्रभावकारी उच्चाकरण किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. के यशस्वी प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने अपने उद्‌बोधन में आचार्य देवव्रतजी को हिमाचल प्रदेश का महामहिम राज्यपाल बनाए जाने पर हार्दिक बधाई देते हुए इसे सभी आर्यो और सम्पूर्ण डी.ए.वी. परिवार के लिए गर्व की बात बताया। प्रधानजी ने भारत सरकार का इस शुभ-कार्य के लिए धन्यवाद करते हुए कि आचार्य देवव्रतजी, जो स्वयं एक अध्यापक है, उनको इतना बड़ा सम्मान देकर आर्य समाज पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मान्य प्रधानजी ने यह विश्वास जताया कि महामहिम के नेतृत्व में इस पर्वतीय प्रदेश में अज्ञानता और जो अन्य सामाजिक तथा नैतिक बुराईयां फैली हुई है उनको दूर करने का मार्ग प्रशस्त होगा। श्री सूरी ने आचार्यजी को विश्वास दिलाया कि हिमाचल प्रदेश में स्थित डी.ए.वी. के 52 स्कूल और कॉलेज, इनके सारे अध्यापक, प्राध्यापक और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश, हर समय और हर प्रकार से महामहिम राज्यपाल के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर रहेंगे।

(शेष पृष्ठ 19 पर)

आर्य समाज सेवा कार्यो से जुड़े

आर्य समाज का छठा एवं नौवा नियम हमें निरन्तर आर्य समाज के स्थापना काल से ही जनसेवा हेतु प्रेरित करता रहा है और लगभग उसी काल से आर्य समाज के नेता/कार्यकर्ता/सामान्य सदस्य अपने-अपने ढंग से मन, बुद्धि एवं विचार से जनसेवा के कार्यो में लगे रहे।

समय के साथ इन जनसेवाओं की पद्धति एवं क्षेत्र बदलते रहे। आर्य समाज ने वेद प्रचार के माध्यम से लोगों की आध्यात्मिक सेवा, पाखण्ड एवं रूढ़िवाद के प्रति जागरूकता, योग प्राणायाम के द्वारा शारीरिक उन्नति के रूप में सेवा तो की है साथ ही गांव स्तर पर हैजा, महामारी आदि जानलेवा बीमारियों में सेवा कार्य, गांव के मेलों में चिकित्सा की जिम्मेदारी, भूकम्प, सूखा, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं में भी अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा कार्य किये हैं।

पाकिस्तान से आये शरणार्थियों के लिए आर्य समाज ने बहुत कार्य किया। शरणार्थी शिविरों में भोजन आदि की व्यवस्था प्रमुख रूप से आर्य समाज के कंधों पर ही रही। लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में भी प्रगति होती गई। असंख्य आर्य समाजों भिन्न-भिन्न गाँवों, कस्बों, शहरों और प्रांतो में स्थापित होती गई। जैसे-जैसे आर्य समाज का विस्तार होता गया वैसे ही इसकी शक्ति का भी बिखराव होता रहा प्रांत स्तर पर होने वाले सेवा कार्य स्थानीय स्तरों पर होने लगे जिससे सेवा कार्य का जो प्रभाव पड़ना चाहिए था वह थोड़ा-थोड़ा प्रभाव में भी कमी आई और स्थानीय स्तर पर शक्ति भी कम हुई और यह सिलसिला निरन्तर वर्तमान में भी इसी तरह चल रहा है। आर्य समाज बिखरी वहीं दूसरी ओर सेवाकार्य में भी बिखराव आया।

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि लगभग हर आर्य समाज में आयुर्वेदिक या होम्योपैथिक औषधालय होंगे। कुछ आर्थिक रूप से समृद्ध आर्य समाजों में जाँच प्रयोगशाला (पैथोलॉजी लैब) होंगी। कुछ महानगरों में आँख का अथवा दाँत का हस्पताल एवं एम्बुलेंस की व्यवस्था भी आर्य समाज द्वारा है। इन सबसे मैं उत्साहित अवश्य हूँ लेकिन निराश हूँ। मेरी निराशा का मुख्य कारण है जब मैं अन्य सम्प्रदाय या सामाजिक क्षेत्र में सेवा कार्य करने वाले संगठनों से, अपनी आर्य समाज की सेवाओं की तुलना करता हूँ तो निराशा ही हाथ लगती है।

स्पष्ट कहूँ तो ईसाई धर्म के अनुयाईयों द्वारा जो सेवा के कार्य हो रहे हैं वह जग जाहिर हैं। जिस उच्चकोटि की चिकित्सा आधुनिक उपकरणों के द्वारा वह निर्धन जनता के लिए उपलब्ध करा रहे हैं क्या हम ऐसी सेवा कार्यो की व्यवस्था कर पा रहे हैं। पूरे उत्तर भारत में पंजाब ही एक ऐसा प्रदेश जहां दयानन्द मैडिकल कॉलेज ऐसी सेवा दे रहा है इसके अतिरिक्त मेरी जानकारी में इस स्तर का आर्य समाज के पास कोई भी चिकित्सा संस्थान नहीं है जहाँ विश्वस्तर का सीटीस्केन, एम.आर.आई., रेडिऐसन उपकरण इत्यादि उपकरण लगे हों, कैंसर, मिर्गी, कोढ़, एड्स आदि ऐसी भयंकर बीमारियों हैं जिसके लिये न तो साधारण जनता के पास उपयुक्त धन है और न ही उपयुक्त साधन। चिकित्सा के क्षेत्र में जो प्रगति राष्ट्रीय और विश्वस्तर पर हुई है उससे आज भी भारत की निर्धन जनता अनभिज्ञ है। इस क्षेत्र में आर्य समाज राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक प्रान्त में एक ऐसा चिकित्सा संस्थान खोले जिसमें विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हों और वह भी कम से कम कीमत पर। इस कार्य पर करोड़ों रूपये की लागत आयेगी लेकिन यदि आर्य समाज पूरे राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं विश्वस्तर पर संगठित हो, अपनी शक्ति को बढ़ाते हुए इस कार्य को करें तो सफलता अवश्य मिलेगी। आर्य समाज की शक्ति को मैं कम नहीं मानता, दूसरे लोग आर्य समाज की शक्ति को पहचानते हैं, इसीलिए इसे हथियाने की कोशिश में भी हैं। मेरे सुझाव से सार्वदेशिक सभा एवं डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति यदि संयुक्त रूप से इस कार्य को अपने हाथ में ले तो कोई दो राय नहीं कि सफलता हमसे दूर हो। ये चिकित्सा क्षेत्र कैंसर का, मिर्गी का, कोढ़ का, एड्स आदि अन्य भयंकर जानलेवा बीमारियों का हो सकता है। इस कार्य के लिये दान स्वरूप धन भी प्राप्त होगा और सरकार द्वारा भी सहायता प्राप्त होगी। केवल मिल बैठकर परियोजना बनाकर आर्य जनता एवं राष्ट्र के सम्मुख रखने की देर है।

कितने आश्चर्य की बात है कि आर्य समाज ने अब तक अपना ब्लड बैंक बनाने पर कभी विचार नहीं किया। आर्य समाजों को एवं आर्य युवकों को रक्त दान के प्रति प्रोत्साहित करने हेतु कोई कार्यक्रम नहीं बना। शायद पिछले कुछ वर्षो में मेरी जानकारी अनुसार एक या दो जगह आर्यवीरों द्वारा रक्तदान शिविरों का आयोजन हुआ है लेकिन वह भी बहुत निम्न स्तर पर। मेरे उपरोक्त कथनानुसार जो कार्य राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए वह स्थानीय स्तर पर ही होकर रह गया।

अगर उपरोक्त सुझाव, कब संगठित होंगे और कब परियोजना बनेगी, के आधार पर उत्साह नहीं पकड़े तो स्थानीय स्तर पर आर्य समाजों में छोटा-औषधालय खोलें लोगों का इन्तजार करने से अच्छा होगा कि स्थानीय अस्पताल में अपने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को लेकर अस्पताल के अधिकारियों से आज्ञा ले, जर्नल वार्ड में जाये, आपको ऐसे कई रोगी मिल जायेंगे, जिन्हें पूछने वाला भी कोई नहीं होगा। किसी को औषधि की आवश्यकता होगी, किसी को बाजार से कोई अन्य वस्तु लानी होगी, उनसे पूछ उनकी सेवा करें। कई ऐसे रोगी मिल जायेंगे जो निकटवर्ती क्षेत्रों से आये होंगे और रात्रि रहने की व्यवस्था नहीं होगी, उनके लिए अपनी आर्य समाज के द्वार खोल दीजिए। उन्हें नि:शुल्क आर्य-साहित्य भेंट स्वरूप देवें। आपके और आर्य समाज के प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ेगी और उनके मुख से जो प्रशंसा अपने कस्बे एवम् गांव में जाकर होगी उसका प्रभाव व्यापक होगा। अगर ऐसा कुछ आप कर सके तो समझिए कि आपने एक दीप जला दिया, और अगर ऐसे असंख्य दीप जल गये तो मशाल बनते देर नहीं लगेगी।

मेरा यह लिखने का अभिप्राय किसी की आलोचना करना नहीं है। केवल मात्र हम सेवा के क्षेत्र में कहाँ खड़े हैं इसका दर्पण दिखाना मात्र था। उच्च अधिकारी एवं आर्य नेतागण ईसाई समुदाय के सेवा कार्यो से तुलना करने पर मुझे क्षमा करेंगे लेकिन ईसाईयों द्वारा किये जा रहे जबरन धर्मान्तरण का जहाँ हम दृढ़ता के साथ विरोध करते हैं। वहीं दूसरी ओर सेवा कार्यो से प्रेरणा लेना एक खुले दिमाग की सोच है। मेरे मन की पीड़ा और उत्साह को आँकते हुये मेरे इन विचारों एवं सुझावों से यदि इस क्षेत्र में हम राष्ट्रीय स्तर पर कुछ कार्य कर सकें तो मुझे ही नहीं अपितु असंख्य ऋषिभक्तों को प्रसन्नता होगी।

सफलता चलकर नहीं आती, हमें उस तक पहुंचना पड़ता है।
ठीक उसी तरह जिस तरह ईश्वर ने
हर पक्षी के लिए भोजन तो दिया है लेकिन उसके घोसले में नहीं।

अजय टंकारावाला

गौ–दान : महा–दान

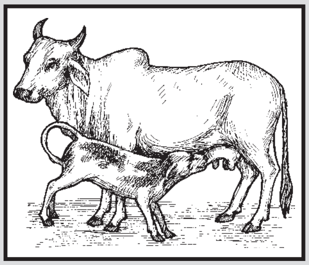

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में दिल्ली राज्य स्तरीय बालिकाओं हेतु

वैदिक ज्ञान व अन्य प्रतियोगितायें

स्थानः आर्यसमाज बी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58 फोन-25594794

शुक्रवार दिनांक 23 अक्टूबर 2015

चित्रकला प्रतियोगिता अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक (सभी आयु वर्ग हेतु व चित्र इच्छानुसार)

शनिवार दिनांक 24 अक्टूबर 2015

वाद-विवाद प्रतियोगिता अपराह्न 2 बजे से 5 बजे तक (12 वर्ष से अधिक आयु वर्ग हेतु)

विषयः आज की शिक्षा प्रणाली क्या बच्चों को सही मार्ग पर ले जा रही है?

भजन एवम् कविता प्रतियोगिता (12 वर्ष से कम आयु वर्ग हेतु)

विषयः देश भक्ति के गीत एवम् कविता अथवा स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित गीत

नियमः कृपया बच्चों के साथ कोई अभिभावक जरूर आयें। चित्रकला के लिए रंग, पेन्सिल आदि अपने साथ लायें। केवल ड्राइंग शीट दी जाएगी। 24 अक्टूबर को सभी प्रतियोगिताएं साथ-साथ चलेंगी, केवल समय से आने वाले प्रतियोगी ही भाग ले सकेंगे।

कार्यक्रम के उपरान्त अल्पाहार अवश्य लेवें।

-: निवेदक :-

साध्वी डॉ. उत्तमा यति, प्रधान संचालिका
मृदुला चौहान, संचालिका (9810702760, 24339700)
आरती खुराना, सचिव (9910234595)
विमला मलिक, कोषाध्यक्ष

प्रतियोगियों का पंजीकरण कार्यक्रम से 1 घंटा पूर्व होना अनिवार्य है।

वैदिक अभिवादन नमस्ते

❒ डॉ. धर्मवीर सेठी

बालक/बालिकाओं, छात्र/छात्राओं को न्यूनतन संस्कारों से अवगत कराने के लिए संस्कृत भाषा के अधोलिखित श्लोक का प्राय: पाठ कराया जाता है:

अभिवादनशीलस्य, नृत्य वृद्धोपसेविन:।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु:, विद्या, यशो, बलम्।।

अर्थात् जो आगत (घर आने वाले) का सत्कार करता है, प्रतिदिन जो व्यक्ति बूढ़ों और बुजुर्गो की सेवा करता है (क्योंकि इस आयु तक पहुँचने वाला व्यक्ति अपने आपको एकाकी न समझे, इसलिए किसी न किसी के साथ अपना कुछ समय अवश्य बात-चीत कर व्यतीत करना चाहता है) उसके जीवन में चार चीजें वार्धक्य को प्राप्त होती हैं: पहली आयु अर्थात् बुजुंर्गो के हाथ जब आशीर्वाद देने के लिए उठते हैं तो वे यही प्रार्थना और कामना करते हैं कि उस व्यक्ति की उमर लम्बी हो (और सच्ची प्रार्थना से होता भी है, ऐसा देखा गया है): दूसरी विद्या ग्रहण में (उन्नति) प्राप्ति, तीसरी जब ईमानदारी और पूरी निष्ठा से वह बालक विद्या ग्रहण करेगा तो उसका नाम अवश्यमेव प्रख्यात होगा, उसका यश फैलेगा और चौथी उपलब्धि होगी उसके मनोबल ओर शारीरिक बल में वृद्धि। वस्तुत: बड़ो-बूढ़ों के आशीर्वाद में बड़ी ताकत होती है। 'आयुष्मान भव' भारतीय संस्कृत का यह वाक्यांश कितना महत्वपूर्ण है।

उपरोक्त अभिवाद/सत्कार में पैरों को छूने (चरण स्पर्श) की भी पुरारी प्रथा है और यह चरण-स्पर्श दोनों हाथों को क्रास कर अर्थात् दोनों हाथों से अभ्यागत का (दायें हाथ से दायाँ पैर और बाएँ हाथ से बायाँ) पैर छूना। स्वभावत: सत्कार प्राप्त करने वाला आपके सिर पर हाथ रख का ढेरों आशीर्वाद देगा।

एक अन्य प्रथा साष्टांग-दण्डवत् प्रणाम की भी है। स्वामी रामदेव अपने गुरु जी को इसी प्रकार प्रणाम करते दिखाई दिये।

एक और प्रक्रिया है, घर आए मेहमान अथवा आप किसी को पहली बार मिल रहे हो उसे, 'नमस्ते' कहने की। इस शब्द का सन्धि-विच्छेद करें तो बनता है 'नम:+ते'। व्याकरण के नियमानुसार विसर्ग (:) को (स्) हो जाता है। नम: से अभिप्रेत है सम्मान (इज्जत,आदर)और 'ते' के अर्थ है 'आपके प्रति'। अत: नमस्ते का अर्थ हुआ मैं आपका स्वागत/सम्मान/आदर करता हूँ। 'नमस्ते' सदा दोनों हाथ जोड़कर और दिल के साथ लगाकर की जाती है। दोनों हाथों की अंगुलियाँ और हथेली जब जुड़ जाती हैं तो शक्ति का प्रतीक भी बन जाती है। 'संघे शक्ति कलियुगे' संगठन में ही शक्ति होती है। अस्तु! 'नमस्ते' सबके लिए सार्वभौम और सार्वकालिक अभिवादन बन जाता है।

वस्तुत: भारतीय (वैदिक) संस्कृति में अभिवादन के लिए 'नमस्ते' परम्परा से ही सर्वमान्य रही है परन्तु इस सम्बन्ध में कई भ्रान्तियाँ फैला दी गई कि यह अभिवादन किसी वर्ग विशेष का है। जब कि यह प्राचीनतम है, ईश्वरीय देन है और मानवमात्र के लिए है। यह शब्द छोटे-बड़े सब के लिए प्रयोग में लाया जाता है। ऋग्वेद में स्पष्ट कहा गया है:

नमो महद्भ्यो, नमो अर्भकेभ्यो, नमो युवाभ्यो, नम आसीनेभ्य:

जरा 'नमस्ते' के अन्तर्भाव को समझने का प्रयास कीजिए। हाथ जोड़कर आप अपने सामने वाले व्यक्ति को यह अनुभव करा रहे हैं कि मैं केवल आपके लिए, आपकके प्रति पूरी निष्ठा से समर्पित हूँ। इस शब्द के द्वारा दिल से दिल को छूने का भाव परिलक्षित होता है।

कभी-कभी 'नमस्ते' की जगह 'नमस्कार' (नम:कार) शब्द का प्रयोग किया जाता है जो असंगत है क्योंकि मैं किसको नमस्कार कर रहा हूँ, उसका नाम भी बोलना पड़ेगा जैसे 'ओ३म् नम: शिवाय' इत्यादि।

'नमस्ते' वास्तव में अपने आप में पूर्ण अर्थ प्रकट करने वाला छोटा वाक्य हैं क्योंकि इसमें 'ते' से अभिप्राय आपके सम्मुख खड़ा हुआ व्यक्ति ही तो है। किसी का नाम लेने की आवश्यता ही नहीं। और इस पदांश से तो 'दिल से दिल को राह' से दिल को राह' की कहावत सिद्ध होती है। संस्कृत के नाटककारों और महाकवियों ने भी अपनी रचनाओं में 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग किया है।

अभिवादन के लिए कुछ अन्य पदांशों का भी प्रयोग किया जाता है जैसे 'राम-राम', 'जय श्रीकृष्ण', 'जय श्रीराम', 'जय दुर्गे', आदि। 'राम-राम' बलात् धर्मान्तरण करने वाले मतान्ध यवनों का मुकाबला करने के लिए हिन्दुओं ने द्विरूक्ति के रूप में अभिवादन-प्रत्यभिवादन का रूप दिया। 'जय श्रीकृष्ण', 'जय श्रीराम', 'जय दुर्गे' तो धार्मिक जयघोष के रूप में देखे जाने चाहिए। हमारे सिक्ख भाई जब परस्पर 'सत्श्री अकाल' से अभिवादन करते हैं या हमारे जवान जब 'जय हिन्द' पदांश का प्रयोग करते हैं तो वे युद्धकालीन जयघोष जाने जाते थे, उसी तरह जैसे 'अल्लाह-उ-अकबर' मुसलमानों का जयघोष कहा जाता है। हाँ, मुसलमान में अभिवादन के लिए 'आदाब' अर्थात् सलाम शब्द का भी प्रयोग होता है जिसमें उस शख्स की सलामती का भाव छुपा रहता है। मनु ने उस 'सलामती' के भाव को यूँ प्रकट किया-

ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत्, क्षत्र बन्धुमनामयम्।
वैश्यं क्षेमं समागत्य शूद्रं आरोग्यमेव च।।

वर्तमान समय में तो अभिवादन के नये-नये रूप सामने आ रहे हैं-हाय (हाथ ऊँचा करके), बाई-बाई, टॉ-टॉ (हाथ ऊपर कर दायें से बायें हिलाते हुए) इत्यादि। 'हाय' से तो ऐसा लगता है जैसे कोई प्रिय चल बसा हो। अंग्रेजों की संस्कृति से प्रभावित होकर हम 'गुड-मार्निग, 'गुड-ईवनिंग' बोल कर उनका अभिवादन करते हैं परन्तु इन शब्दों से परस्पर आत्मीयता का आभास नहीं होता। यह तो समय का द्योतन करने वाले शब्द मात्र हैं। क्या ही अच्छा हो कि इसके स्थान पर 'शुभ प्रात:' और 'शुभ संध्या' कहा जाए।

चारों वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मणों ग्रंथों में 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग हुआ है। कतिपय बानगी प्रस्तुत हैं:

यजुर्वेद: नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे
नमस्ते भगवन्नस्तु यत: स्व: समीहसे। -36/21

लगभग ऐसा ही भाव अथर्ववेद (11/4/2) में भी व्यक्त है।

शतपथ ब्राह्मण: स होवाच जनको वैदेहो नमस्ते

स होवाच नमस्ते यज्ञावल्काय-14/6/5

उपनिषद् में 'नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो:' के रूप में 'नम:' या 'नमस्ते' का ही प्रयोग है। 'नम:' 'नमस्ते' का ही अंश है। श्री गुरुग्रन्थ साहिब की अकाल स्तुति में भी 'नमस्त' अकाले,' 'नमस्तं कृपाले' में

'नमस्तें' का ही स्थानापन्न है।

विदेशों से भी जब कोई भारत-भ्रमण के लिए आता है तो 'नमस्ते' कह कर अभिवादन करने में वह प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

न जाने हम भारतीय क्यों अपनी वैदिक और प्राचीन काल से जीवन्त अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं या यूँ कहें उसके प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। समय है चेतने का, अपनी सांस्कृतिक मर्यादाओं की सुरक्षा का।

तो आइए! स्वीकार करें कि जो शब्द अभिवादन के समूचे अर्थ के साथ पूर्ण सम्मान, प्रति सम्मान और आशीर्वाद के भाव को अपने में संजोये है वह शब्द है 'नमस्ते'।

- 'वरेण्यम्', ए-1055, सुशान्त लोक-1, गुरुग्राम-122009

अपील

सभी आर्य बहनों से नम्र निवेदन कर रही हूं कि वह ऋषि भूमि टंकारा से अवश्य ही जुड़े, वहां पर होने वाले कार्यो को ध्यान से देखें। बड़े ही अच्छे अच्छे कार्य हो रहे हैं। उन कार्यो में अपना सहयोग देकर ऋषि ऋण उतारने की कोशिश करें और यह हम आर्य बहनों का कर्त्तव्य भी है। टंकारा हमारा तीर्थ स्थल है, वहां कार्यो की बहती गंगा है-गुरुकुल में बच्चों को पढ़ा सकते हैं, छोटे बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं-विशेषकर महिला सिलाई केन्द्र में सहयोग देकर बड़ा ही भला काम कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वहां लगातार रहना होगा। वर्ष में दो तीन बार जाकर सेवा कर सकते हैं। जो बहन वहां जाने की इच्छा रखती हो, वह कृपया मेरे से सम्पर्क करें, तो मैं विस्तृत रूप से बताकर पूरा सहयोग दूंगी।

- राज लूथरा, जी आई 976, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली-110023, मो. 9971206548

विजय दशमी

❐ प्रणव शास्त्री

यह विजय का पर्व आया
मानवों के मानसों में मधुर मन उल्लास लाया।1।

सत्यता की ध्रुव धरोहर पर न कोई हाथ डाले।
यह जगत् का नियम शाश्वत न्यायकारी न्याय पाले।
निहित जन-हित है इसी में पाठ यह सब को पढ़ाया।2।

आसुरी अघ-वृत्तियां ये मांग सिन्दूरी सजायें
सृष्टि के नेपथ्य-पथ में आ नहीं आसन जमायें
हो न नर्तन नग्न इनका ध्यान इसका है दिलाया।3।

देव असुरों का सदा संग्राम होता ही रहा है
दैत्य-दल संहार का आयाम होता ही रहा है
भूत ने भावी जगत् को आज फिर से जगाया।4।

रौद्र रावण-वृत्तियों के दीप भी जलने न पायें
कंस या शिशुपाल याहया फूलने फलने न पायें
सत्य जय की धारण ने है किया इनका सफाया।5।

आत्म जेता ही धरा पर जीत का डंका बजाते
संयमी हनुमान ही तो पाप की लंका जलाते
विश्व के इतिहास में भी यह सुभग सन्देश छाया।।6।।

काम से ही राम का शुभ नाम अमृत में सना
दे रहा है प्रेरणा नित तनिक भी संशय बिना
कर्म कञ्चन-दण्ड पर ही यह विजय ध्वज लहलहाया।7।

अतुल अत्याचार को आचार ने मुंह की खिलाई
मृत्यु मुख में जा रही थी जो कि मानवता जिलाई
युग-युगों से तथ्य यह निर्भ्रान्त जन-मन में समाया।8।

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

प्रभु का क्रीडा-स्थल है यह संसार

❒ पं. देवनारायण भारद्वाज

यह संसार प्रभु का क्रीडा-स्थल है और मनुष्य मात्र के लिए यह कर्मस्थल है। परमात्मा तो सत्-चित्-आनन्दस्वरूप है ही। वह हमको भी सत्ता व चेतनता के साथ आनन्द की ओर प्रेरित करता रहता है। लोग प्रायः कहते हैं कि हर काम खेल की भावना से करना चाहिए। खेल से हमें तीनों वस्तुएँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। कोई भी खेल क्यों न हो, चाहे शारीरिक खेल हो, या मानसिक, नृत्य-नाटक, गायक आदि, सभी में निर्धारित नियम प्रक्रिया का पालन करना होता है। खेल अकेले नहीं अनके लोगों के साथ मिलकर खेला जाता है और जीत हो या हार, खेलने में सुख की प्राप्ति होने लगती है। ऐसा ही कुछ बोध हमें वेद भगवान् प्रदान करते हैं।

उस प्रभु के खेल के मैदान, यह जल-रजकण वाली पृथ्वी, फूलों से लदे वृक्ष, वायु एवं किरणों से परिपूर्ण आकाश और सूर्य लोक भी हैं। प्रभु के क्रीड़ांगन असंख्य और बड़े विस्तीर्ण हैं। प्रभु खिलाड़ियों को उनकी कर्म-क्षमता एवं कर्मफल व्यवस्था के अनुसार बल प्रदान करते हैं। जो खिलाड़ी इस व्यवस्था से हटकर छल-कपट, उत्तेजक औषध या मादक द्रव्य ग्रहण कर खेल खेलता है, वह न केवल क्रीडांगन से बाहर ही कर दिया जाता है, दण्डित भी होता है। परमेश प्रभु खिलाड़ी भी हैं, निर्देशक भी हैं और निर्णायक भी हैं। उसका अनुसरण करके ही हम किसी भी खेल में सफल होते हैं। कई लोग किसी को रूलाकर हंसते हैं। उनका यह खेल उन्हें नक में एक दिन जब धकेल देता है तब उनके रूदन का पारावार नहीं रहता है।

अधिष्ठाता अविनश्वर वही प्रभु हमको सुख देने वाली और मान करने वाली माता हैं। 'स पिता स पुत्रः' (ऋ 1.16.10) वही सबका जनक पालक पिताप है, नरकादि दुःखो से पवित्र व रक्षा करने वाला पुत्र है, धारण, उत्कर्ष एवं मारण करने वाले सभी देवों के रूप में वही विद्यमान है। उनमें पितर, आचार्य, अतिथि, उपदेशक, अध्यापक सभी पञ्चजन आ जाते हैं। वही चेतन ब्रह्म परमात्मा सब जनों के जीवन एवं नामकरण का हेतु है। वेद के अनेक मन्त्रों में उक्त तथ्य का अनुमोदन किया गया है। 'सुमित्रः सोम नो भव' (ऋ. 1.91.12) प्रभु हमारे अच्छे मित्र हों। 'स नो बन्धुर्जनिता स विधाता' (यजु. 32.10) वही प्रभु हमारे भाई, जनक एवं विधायक हैं। इतना ही नहीं, वह दुराचारियों के शत्रु भी हैं। 'यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः' (यजु 25.13) के अनुसार उसकी छाया विद्वान विज्ञानी लोगों के लिए अमृतमयी मोक्षसुखदायक है और दुष्टजनों के लिए बारम्बार मरण एवं जन्म रूप महाक्लेशदायक है। जब मनुष्य यह समझ लेता है कि वह इस जीवन के कर्म-क्रीडांगन में उस प्रभुरूपी निर्देशक, निर्णायक एवं महापात्र के कार्यो को कर रहा है तो उसके सभी कार्य पात्र धर्म के अनुकूल होने चाहिए। कोई पात्र, नायक या नायिका कितना ही अधिक प्रसिद्ध हो, अकूत पारिश्रामिक पाता हो, उसे अपना कार्य निर्देशक के संकेत के अनुसार ही करना पड़ता है। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो निर्देशक उसकी पुरावृत्ति 'फिर से करो' (रिटेक) कह कर करता रहता है, जब तक कि वह उचित रूप प्राप्त नहीं कर लेता है। यही कर्मफल व पुनर्जन्म का चक्र है, जो हर मनुष्य या प्राणिमात्र को जन्म-जन्मान्तर तक झेलना पड़ता है।

प्रभु-प्रेरित विद्वान एवं विदुषी। आप हम लोगों के लिए उत्तम पति, उत्तम भार्या, प्रशंसित धन और उत्तम शिक्षा से धर्म-आचरण की प्राप्ति कराइये। 'महाअभिज्ञवा यमत' (साम. 615) इस मार्ग में किसी स्तर पर भी चूक हो जाने पर उस प्रभु की प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है।

परमात्मा ही हमारे लिए बड़े बलों का देने वाला है, वही कर्मानुसार हमें नचाने वाला है। वही लय-ताल-स्वरभंग होने पर अर्थात् कर्मफल बन्धनों से घुटनों के बल टिकने पर हमें बाध्य कर देता है। संसार में व्यवहार करने वाले गृहपति की जो आकांक्षा 'वामं गृहपतिं नय' (ऋ 6. 53.2) में ध्वनित होती है वही 'अग्ने नय सुपथा' (यजु. 40.16) में व्यक्त होती है। प्रभु हमें सुन्दर कल्याणकारी मार्ग पर आगे ले चलें। हमें कुटिलतायुक्त पाप कर्म से बचायें, प्रज्ञान और ऐश्वर्य प्राप्त करायें। लेखक यहाँ 'नय' शब्द पर मुग्ध है। जो संस्कृत धातुकोश के अनुसार (नय गतो-नयते-प्रणयते' जाना, हिलना, पहुँचना एवं रक्षण करना अर्थ प्रकट करता है। प्रभु के अधिकार में 'नय' है तो हमारे अधिकार में अनुनय-विनय है। प्रभु से हम विनय करने के अधिकारी तभी होते हैं, जब हम समझ लेते हैं कि वे 'नय' आगे-आगे चलने वाले नायक हैं। हम उनके (अनु-नय) पीछे-पीछे चलने वाले सहायक हैं। हम तुम्हारे अनुसार ही चलते हैं और (विनय-वि+नय) अपने इस 'नय' को 'विशेष नय' बनाकर उसमें अपनी कृतज्ञता एवं नम्रता को जोड़कर अपनी मांग को प्रार्थना एवं पुरुषार्थ रूपी दो पार्श्ववर्त्ती मुद्रा के रूप में ढाल देना चाहते हैं। अकर्मण्य नहीं, कर्मवीर बनकर नम्रता पूर्वक तुम्हारे मार्ग का अनुसरण करेंगे, तब तो तुम हमें अपने बल की सहाय प्रदान कर ही दोगे। यह हमारी गतिशीलता इतनी समर्थ होगी कि सन्तति हमसे तुम्हारी तुलना करने लग जायेगी और जैसा हम अपनी सन्तति के लिए करते हैं वह तुमसे भी वैसा ही करने को कहने लगेगी। यथा **'स नः पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव'** (1.1.9) **तथा 'मातेव यद् भरसे पप्रथानो'** (ऋ 5.15.4)

देखिये न याचक जगत्पिता से इस संसारी माता-पिता की भाँति उत्तम ज्ञान पदार्थ आदि देकर कल्याणकारी होने की याचना कर रहा है। ऐसा इसलिए तो सम्भव हुआ, किस इस संसार के पिता और उसके पुत्र ने प्रभु के 'नय' को अपने जीवन में 'अनुनय-विनय' बनाकर एकाकार कर दिया है। जो प्रभु है वह पिता है और जो पिता है वह प्रभु है। संसारी पिता नहीं रहता है तो प्रभु-पिता तो रहता ही है। पुत्र उसी के 'नय' से अपने 'अनुनय-विनय' को पूर्ण करता रहता है।

विद्या से विनय, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म व धर्म से सुख प्राप्त होता है। चाल-ढाल व अनुकरण इतनी सुन्दरता एवं समग्रता से किया जाये तो नकली भी असली लगे। दृश्य में दिखाये जाने वाले कलाकार के आँसू तो नकली होते हैं, जिन्हें देखकर दर्शक अपने असली आँसू बहाने लगते हैं। एक नाटक में खलनायक किसी युवति पर अत्याचार करता हुआ दिखाया गया। वहाँ बैठे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने दुःखी होकर उन्हें जो कुछ भी मिला, वही उठाकर उस खलनायक पर फेंककर मार दिया। दृश्य पूर्ण होने पर खलनायक आकर विद्यासागर जी के चरण स्पर्श करने लगा। इसलिए नहीं कि वह अपने द्वारा किये गये अत्याचार के लिए क्षमा माँग रहा था, प्रत्युत इसलिए कि वह विद्यासागर की प्रतिक्रिया के लिए धन्यवाद प्रस्तुत कर रहा था, और इसे अपने अभिनय की सफलता मान रहा था। जैसे संसार अभिनय की सफलता मान रहा था। जैसे संसार अभिनय में पूर्वाभ्यास एवं सावधानी चाहिए, वैसे ही संसारी लोगों को प्रभु के 'नय' को प्राप्त करने के लिए अपने 'अनुनय-विनय' के पात्रता धर्म का सार्थक अभ्यास एवं अनुकरण करना अनिवार्य है।

एमआईजी पी-45, अवन्तिका कालोनी रामघाट मार्ग, अलीगढ़

पुस्तक समीक्षा

वैदिक निनाद

'वैदिक निनाद' वैदिक ज्ञान के मौलिक तथ्यों का सीधा साक्षात्कार करानेवाली पुस्तक है। हिन्दी भाषा में वैदिक विमर्श की यह संभवतः पहली पुस्तक है जो, आर्य संस्कृति (वैदिक संस्कृति) के अनेक आयामों की विवादास्पद व्याख्या प्रस्तुत कर विभ्रम फैलानेवाले, तथाकथित विद्वानों और इतिहासकारों की अल्पज्ञता और पाश्चात्य-भक्ति की पोल खोलती है, और वैदिक वेदाध्ययन-निषेध, यज्ञ में पशुवध, ऋषियों के मांसाहार, मदिरा-पान आदि बहुत से ऐसे विषय हैं जो व्यर्थ होते हुए वैदिक व्यवहार पर बलात् थोप दिये गए हैं, जिनका खंडन और यथार्थ वेदार्थ का मंडन इस पुस्तक में बड़े साहस के साथ किया गया है।

राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व के वैदिक सम्मेलनों-संगोष्ठियों में प्रस्तुत किये गये इक्कीस गहन-गवेषणापूर्ण निबंधों का यह संग्रह वेदाध्येताओं, छात्र-छात्राओं, अध्यापकों और अनुसंधानकर्ताओं के लिए अत्यंत उपादेय हैं।

'गन्धर्व-अप्सरा', 'सृष्टि-रचना', 'वेदों में आर्थिक चिन्तन', 'अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त', यजुर्वेद और सौत्रामणी याग', 'वशिष्ठ धनुर्वेद संहिता' 'सृष्टि का संगीत सामवेद' और 'व्रात्य' सम्बन्धी निबंध वैदिक अध्ययन-चिन्तन की एक नवीन दिशा खोलते हैं।

पुस्तक की लेखिका आचार्य नन्दिता शास्त्री चतुर्वेदी वैदिक साहित्य की मर्मज्ञ विदुषी और धुरन्धर शास्त्रार्थी के रूप में विख्यात हैं। वैदिक सिद्धान्तों के निर्भ्रान्त ज्ञान और महर्षि दयानन्द की आर्ष दृष्टि के प्रति अगाध आस्था एवं दृढ़ निष्ठा वाली आचार्या नन्दिता शास्त्री अपराजेय शास्त्रार्थी मानी जाती हैं। विद्वज्जन वैदिक विमर्श में इनको वही महत्त्व देते हैं जो इतिहासकार अंग्रेजों के साथ युद्ध में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को देते हैं। इस पुस्तक की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इसमें प्रतिपादित और विवेचित चिन्तन-मनन की सरणि आचार्या जी की अपनी है, किसी दूसरे का उधार लिया हुआ नहीं है। मूल वेद संहिताओं तथा वैदिक ग्रन्थों के साथ-साथ पूर्व वैदिक विद्वानों (पं. भगवद्दत, स्वामी ब्रह्ममुनि, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी प्रभृति) के ग्रन्थों का भी आचार्य जी ने आलोडन किया है। एक नहीं अनेक निष्कर्ष इनके अपने हैं और शैली भी इनकी अपनी है।

निश्चय ही इस पुस्तक के अध्ययन से वेदाध्ययनप्रिय सज्जनों का ज्ञानवर्द्धन और आत्मतोष होगा। वैदिक साहित्य पर लिखे गये गम्भीर ग्रन्थों की श्रृंखला में इस ग्रन्थरत्न को प्रकाश में लाने के लिए आचार्य नन्दिता जी सभी वेद-विद्वानों तथा वेद भक्तों की ओर से भूयोभूयः धन्यवाद की अधिकारिणी हैं।

प्राप्ति स्थानः पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, बी 27/98, ए-8, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-221010, टेलीफोन-(91-542)2314060,
E-mail-pilgrimspublishingvns@gmail.com, **मूल्यः 300/- रूपये**

महारोग चिकित्सा विज्ञान

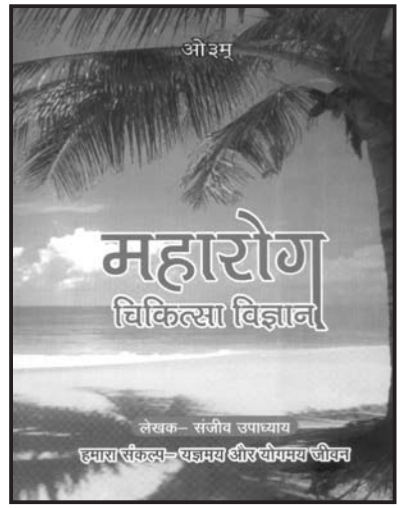

परमात्मा की वाणी वेदों के उपवेद में वर्णित आयुर्वेद पर प्राचीन काल से ही शोध पूर्ण साक्ष्य उपलब्ध होते हुए भी अद्यतन मनुष्य शरीर को स्वस्थ व सुखी रखने के लिए अनेक मनीषी, ज्ञानी, आयुर्वेदाचार्य, योगाचार्य अपने अन्वेषण एवं शोध के आधार पर चिकित्सा व निदान हेतु प्रयासरत है। प्रस्तुत पुस्तक महारोग चिकित्सा विज्ञान के लेखक योगाचार्य संजीव उपाध्याय ने जहां एक ओर वर्षो तक योग शिक्षक के रूप में अनेक असाध्य रोगियों को स्वस्थ किया है। वहीं आयुर्वेद के शास्त्रों का अध्ययन करने के साथ ही हठयोग, षठकर्म, एक्यूप्रेशर व सूजोक आदि थैरेपी का प्रयोग कर उन अनेक गम्भीर रोगियों के लिए आशा की किरण जगायी है, जो अनेक उपायों को करने के उपरान्त भी निराश हो चुके हैं।

विद्वान लेखक ने रोगोपचार की विधि विधियों पर गम्भीर शोधपरक तथ्यों को सरलता, सहजता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रथम रोग आऐं ही नहीं ऐसा प्रयास हो और यदि शरीर में कोई रोग प्रविष्ठ हो ही गया है तो वह स्थायी न हो पाये इसलिए एक्यूप्रेशर सूजोक चिकित्सा यज्ञ चिकित्सा पर विस्तृत विश्लेषण पुस्तक की व्यावहारिक उपयोगिता को सिद्ध करते हैं।

शरीर में होने वाले रोगों का पृथक-पृथक वर्णन सामान्य से विशिष्ट व्यक्ति तक पुस्तक की आवश्यकता को प्रतिपादित करता है। वर्तमान में जिन रोगों का प्रकोप प्रायः दृष्टिगत होता है उनमे प्रमुखता से मोटा, मधुमेह, हृदयरोग, उदररोग, दांत रोग, वातरोग एवं प्रजनन सम्बन्धी रोगों के कारणों का वर्णन करने के साथ ही योग आदि प्राकृतिक चिकित्सा, आहार विहार द्वारा आशातीत लाभों का वर्णन अत्यन्त कुशलता व सूझ बूझ के साथ किया गया है। मैने पूरी पुस्तक का आद्योपान्त अध्ययन किया है और मैंने पाया कि यह पुस्तक अद्वितीय है क्योंकि जितनी चिकित्सा विधियों का समावेश एक साथ इस पुस्तक में है वह अत्यन्त दुर्लभ है। लेखक ने अपने कठोर परिश्रम एवं शोध पाठकों तक पहुंचाने का संकल्प लिया है।

पुस्तक प्राप्ति स्थानः

1. श्री विजय कुमार परीदा, बी ब्लॉक, हरित विहार, सन्त नगर, बुराड़ी (दिल्ली-84), मो. 8527456601, 9015131780
2. प्रधान-आर्य समाज, थापर नगर (मेरठ) मो. 9319300954
3. सिंडीकेट बुक हाऊस, 44, सिविल लाईन्स, निकट दीनानाथ क्राकरी, बरेली-243001

मूल्यः 300/- रूपये

RETIREMENT AND RENUNCIATION

❒ Dr. Tulsi Ram

Vanaprastha: Having lived a full family life of love, fidelity and pious observance of duty, as a house holder, the man should call it a day at the ripe age of fifty, especially when a grand child has arrived. The wife may choose to live with him or stay back with the children. The affairs of the family are taken over by the next generation.

Where does he go, having left the home? He retires to a forest abode in a grove of trees where he has to live with nature. He carries nothing of his elaborate wardrobe if he had one, nor any load of sumptuous foods. He carries only what he needs in order to perform the daily yajna, because, even in the forest, he has to observe the five daily rituals of prayer, havan, hospitality, reverence to the learned and service to the environment, birds and beasts. His status in only that of a 'forester'-that is what a Vanaprasthi is, a dweller in the forest. He lives on what he gets and devotes himself to study and teaching.

Let us consider something practical: These days, the forests are under attack. They are generally bare and denuded. There was a time when human population was limited and the natural environment, vast and rich. So there were: numerous abodes and schools run by the forest-retirees and maintained by the society. But these days things are changed. The character of the forest is changed, the nature of forest produce is changed and the form of the mainten of senior people and of services such as education is changed. So what could we now understand by retirement according to Swami Dayanand`s views?

The first thing is management of the generation gap willingly and gracefully by the younger and the older generations. The older generation retires,leaving the affairs to the younger generation, and younger generation takes over all the responsibillities of life and society including the maintenance of the retired people. While the retirement is voluntary and graceful, the maintenance too has to be equally honourable. On the ethics of retirement Swamiji says: "The retired man is a man of love and compassion, living a life of austerity with self control and minimum personal needs. He should keep himself busy in study and teaching, taking nothing from anybody." It meeans that retired life should be a life of independence, self-respect and voluntary service to the community. The younger generation should make it possible.

How does one plan one`s retirement? First, as a householder, he should plan his family in such a manner that, before his retirement, his children are properly settled so that he can relinquish all the responsibilities of the home to the next generation. He thus retires without liabilities. During retirement, all the time he gives freely without taking anything in return. Swamiji says in the next chapter of Satyarth Prakash that the state should arrange for life-time pension of both husband and wife in the case of gevernment servants retiring from service. The implication is that the retired man is a responsibility of the state or of the community so that he gets the maintenance without embarrassment, or, where the state or community is not that advanced, the person concerned joins a pension scheme during his working time. To sum up:

1. The generation gap should be recongnized. The old generation should yield the place to the younger generation, having prepared it for the responsibility.
2. The community/state is responsible for the maintenance of the retired people.
3. The working man should plan his family and finances in a manner that the can have an honourable retired life of voluntary service to the community.
4. The maintenance; of the retired people should be so provided that they neither have to ask for it and feel embarrassed, nor do they have to regret the day of retirement.

Sanyas, Universal Citizenship: Next comes the life of total renunciation, Sanyas, Sanyas is the last phase, the fourth quarter from 75 to 100 years. However, if a person is disposed to take up the orders at the end of Brahmacharya or Grihastha, he can if he feels strongly motivated.

Sanyas is the phase of total freedom and Uninvolvement. During the other phases there could be certain compulsions and involvements under pressure and necessity but, for a Sanyasi, there is none, and if someone wants to tempt, placate and corrupt him, the sanyasi must spurn him right away. (Clean shaven, with the mendicant`s staff and bowl, the wanders around in light ochre robes only to spread the light of truth and do the right. Having passed through the stage of self preparation, social participation and social service, he is* now dedicated to divine service, doing good to all without any discrimination at all. No compromise, only truth God. This is the phase of God-realization to complete the journey without fear or regret.

However, if his senses are not in control, if his mind is still aitated if his soul is not a peace with its self, then even knwledge cannot help him to attain God. Therefore, having received knowledge through education, and experience through living a full life, he should want nothing more of worldly nature. He is now wholly for others. Having no desire for himself he is no burden to anybody except that it is the privilege of others to maintain him. He can, receive gifts of food and clothes at the minimum as required. He can also receive gifts of what is required for his universal mission and of course he has to receive shelter whereever he stays for a day or for a longertime during his work, but he can have nothing to hoard. Thus having everything and wanting I nothing, he is the lord over all including himself and walks under the shadow of God, ultimately to join Him.

What about the ethics of Sanyas? The sanyasi should have control over his thoughts, words and actions and spend all his time and energy in social service and

meditation. He should conquer all fear and hatred and the pride of knowledge and spiritual achievement. He is free all forms of ritual, so he should dedicate himself to truth, love, compassion, non-violence, knowledge and Dharma. The pursuit of yoga should be his daily discipline and the observance of dharma, his daily routine.

And what is Dharma? Swamiji quotes Manu to describe the ten principles of dharma for all, and that is dharma for the sanyasi too: Patience of mind and steadiness of belief and habit so that agitation does not afflict him; forgiveness and tolerance; discipline of the ego; respect for other`s rights and property; cleanliness of body and mind; control of the senses and mind; control of intelligence over emotion and passion; knowledge of reality beyond illusion; truth of thought, word, and action, and control over hate and anger, these are the ten principles of dharma.

If a person does not follow the principles of dharma but moves about in ochre robes, he is not a sanyasi, he is a pretender. A true sanyasi follows and preaches dharma and truth at all cost. Swamiji explodes certain superstitions about sanyas: It is said that a sanyasi must not do anything because he is just a recluse. Nonsense, says Swamiji. If a sanyasi doesn`t spread the message of truth, knowledge and dharma, he is only a burden on the earth. And just as no eye or ear or mind is redundant, so no person is useless. The sanyasi is a venerable member of society, he too must do his part.

Swami Dayanand thus rehabilitates the retired people in modern society: The society should maintain the retired people, they are a social assest as well as responsibility. The elderly people should retire willing and) gracefully do voluntary service selflessly and, by example, propagate truth and dharma without fear and compulsion.

The retired people are indeed an asset and a human resource which developing societies are still unable to tap.

- Courtesy Aryan Heritage

प्रेरणा दर्पण

जरा सोचो

- हम जैसे भी थे, हमारे माता-पिता ने हमें स्वीकार किया। हमारे माता-पिता जैसे भी हैं। क्या हमें उनको स्वीकार नही करना चाहिए?
- कितना भाग्यवान होगा वह व्यक्ति जिसका साथी बुद्धिमान हो। अर्जुन के साथ कृष्ण थे और दुर्योधान के साथ शकुनी। चुनना आपको है?
- महात्मा बुद्ध ने शांति की खोज में सारी सम्पत्ति को त्याग दिया और लोग अपनी शांति को त्याग कर सम्पत्ति की खोज में लगे हैं। कौन सही है?
- हर सुबह आपके पास दो विकल्प होते है। या तो सोते रहकर स्वपन ही देखते रहें। या जग कर स्वप्नों को साकार करने में जुट जाए। पंसद आप की?
- हम सेठ का काम किए बिना उससे वेतन नहीं चाहते। तो ईश्वर का काम किए बिना ईश्वर से फल क्यों चाहते है। यह तो न्याय नहीं है?
- आदमी एक पत्थर को काट कर उसे शक्ल देता है, फिर उसे अपना भगवान मानता है, फिर उसी से डरता है। क्या यही पूजा है?
- आप अपनी बहन की रक्षा के लिए हर समय उसके साथ नही रह सकते हैं, पर दूसरो की बहन-बेटियों की रक्षा तो हर समय कर सकते हैं। आप क्या बनना चाहगे रक्षक या भक्षक?

ईश्वर की कृपा से

1. मैं प्रतिदिन आत्मविश्वास पूर्वक जीऊंगा।
2. मैं अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ईमानदारी से पूर्ण परिश्रम करूंगा।
3. मै अपनी उन्नति में अपने देश की उन्नति समझूंगा।
4. मै बड़ों के साथ पूर्ण सम्मानपूर्वक व्यवहार करूंगा।
5. मुझे दोष बताये जाने पर धैर्य पूर्वक सुनूंगा।
6. क्रोधित नही होउंगा और अपनी सहन शक्ति बनाये रखूंगा।
7. मैं अपने दोषों को देखकर उन्हें दूर करूंगा।
8. मैं अपने कर्तव्य का पालन करूंगा, उससे कभी भी पीछे नही हटूंगा।
9. हे! ईश्वर मुझे शक्ति दो, मैं अपना संकल्प पूरा कर संकू।

आहार

- सुबह के नाश्ते में अंकुरित अन्न व फल भी लें।
- दोपहर के भोजन में सलाद एंव छाछ का प्रयोग भी करें।
- भोजन के तुरंत बाद पानी ना पीऐं।
- पेट में दॉत नही होते इसलिए चबा-चबाकर खाएं।
- सदा शुद्ध,सात्विक, सादा व ताजा भोजन करना चाहिए।
- थोड़ी मात्रा में खाइए हितकर पदार्थो को भी कण्ठ तक ठूंस- ठूंस कर मत भरिए।
- भोजन निश्चित समय पर करें, दिनभर बकरी की भॉति मुख न चलाते रहें।
- जीने के लिए खाओ, खाने के लिए मत जीओ।
- भोजन प्रसन्नता सें करें। भोजन की निन्दा करने से उत्तम से उत्तम अन्न भी शरीर का अंग नही बनता।
- भोजन करने से पहले साबुन से हाथ अवश्य धाोऐं।

बच्चों के लिए आवश्यक बातें

- सुबह सूरज उगने से पहले उठें, एक लीटर पानी पीकर, शौच के बाद घूमने या खेलने जाएं।
- व्यायाम, योगासन और प्राणायाम रोज करें।
- पढ़ाई से संबंधित लिखने व पढ़ने का अभ्यास सुबह करें।
- सुबह उठते ही माता-पिता के पैर छुये, उनका आशीर्वाद लें।
- दोपहर में विश्राम के बाद स्कूल का गृहकार्य पूरा करें।
- शाम को खेलने जरूर जाए और टेलीविजन कम देखें।
- सोने से पहले प्रार्थना व ध्यान करे। इससे बुरे स्वप्न नहीं आऐगें।
- रात को सोने से पहले ब्रश जरूर करें।
- सोने से पहले माता-पिता के पैर दबाकर सोयें।
- भोजन के तुरंत बाद अच्छी तरह कुल्ला करें।
- दिन में पानी कई बार पीये।

- रोशन लाल आर्य, अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल, महेन्द्रगढ़, हरियाणा

पितृ यज्ञ और पितर की परिभाषा

❒ पं. उम्मेदसिंह विशारद्

मान्यवर! वर्तमान पाश्चात्य सभ्यता एवं अत आधुनिक भौतिककरण के इस युग में सम्पूर्ण मानव समाज के परिवारों के उपेक्षित व्यवहार के कारण 90 प्रतिशत वृद्ध अत्यन्त, दुःखी है, और अनुमानित 40 प्रतिशत सन्यासी एवं वानप्रस्थियों को मृत्यु की अन्तिम गति की चिन्ता बनी रहती और 50 प्रतिशत उपदेशको को-अर्थाभाव एवं परिवार व समाज की अनदेखी के कारण जीवन का अन्तिम सौपान कैसे गुजरे बनी रहती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए हमें आगे आना ही होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपनी दूरदर्शिता के कारण इस ज्वलन्त समस्या को समझते थे, तभी तो उन्होंने ऋग्वेदादिभास्य भूमिका के पंच महायज्ञ विषय में सर्वाधिक पांच पृष्ठ पृतयज्ञ और पित की परिभाषा में लिखे है। जिसाक सारांश सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः-
पुनन्तु विश्रा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।। (य.अ.19 म.39)

पितृयज्ञः जिसके दो भेद है- एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध उनमें से जिस कर्म करके विद्वान रूप देवऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते है सो तर्पण कहाता है। तथा जो उन लोगों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना है, उसी को श्राद्ध जानना चाहिए। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुए जो प्रत्यक्ष है, उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मृतकों का प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसलिए उनकी सेवा ही नहीं हो सकती। तथा जो उनके लिए कोई पदार्थ दिया चाहे वह भी उनको नहीं मिल सकता। इससे केवल विद्यमानों के ही श्रद्धा पूर्वक सेवा करने का नाम ''तर्पण'' और ''श्राद्ध'' वेदों में कहा है। क्योंकि सेवा करने योग्य और सेवा करने वाले इन दोनों के प्रत्यक्ष होने से यह सब काम हो सकता है, दूसरे प्रकार से नहीं। सो तर्पण आदि कर्म से सत्कार करने योग्य तीन है देव ऋषि और पितर।

(पुनन्तु) हे! जातवेद परमेश्वर आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिए, और आपके उपासक आपकी आज्ञा पालते है। अथवा जो कि विद्वान पुरुष कहाते है, वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें। और आपके दिये विशेष ज्ञान व आपके विषय के ध्यान से हमारी बुद्धियां पवित्र हो। तथा (पुनन्तु विश्वा भूतानि) सब संसारी जीव आपकी कृपा से पवित्र होकर आनन्द में रहें।

(द्वयंवा.) दो लक्षणों के पाये जाने से मनुष्यों की दो संख्या होती है अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। उनमें भेद होने के सत्य और झूठ दो कारण है। (सत्यमेव) जो कोई सत्य भाषण, सत्य स्वीकार और सत्यकर्म करते हैं वे देव तथा जो झूठ बोलते हैं झूठ मानते हैं, झूठ कर्म करते हैं, वे मनुष्य है। इसलिए झूठ को छोड़कर सत्य को प्राप्त होना सबको उचित है। इस कारण से बृद्धिमान लोग निरन्तर सत्य ही कहें, माने और करें। क्योंकि सत्य आचरण करने वाले देव है, वे तो कीर्तिमानों में भी कीर्तिमान हो के सदा आनन्द में रहते है, परन्तु उनसे विपरीत चलने वाले मनुष्य दुःख को प्राप्त होकर सब दिन पीड़ित रहते है। इससे सत्यधारी विद्वान ही देव कहलाते है।

(ऊर्ज्जवह.) पिता व स्वामी अपने पुत्र, पौत्र स्त्री, और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवे कि (तर्पयतमे.) जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, माता मातामहादि और आचार्य तथा इनसे भिन्न भी विद्वान लोग जो अवस्था या ज्ञान से बड़े और मान्य करने योग है, तुम लोग उनकी (ऊर्ज0) उत्तम उत्तम जल (अमृत) रोग नामक करने वाले उत्तम अन्न, सवा प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि प्रदार्थो से नित्य सेवा किया करो, कि जिससे वे प्रसन्न हो के तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें। क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे। और ऐसा विनय सदा रखो कि हे! पूर्वेक्ति पितर लोगों आप हमारे अमृत रूप पदार्थो के भोगों से तृप्त हूजिये और हम लोग जो-जो पदार्थ आप लोगों की इच्दा के अनुकूल निवेदन कर सकें उन-उन की आज्ञा किया कीजिए। हम लोग मन वचन और कर्म से आप के सुख करने में स्थित है। आप किसी प्रकार का दुःख न पाइये। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मच्चर्यश्रम में हम लोगों को सुख दिया है-वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना चाहिए कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष प्राप्त न हो।

(आयन्तु न.) पितृ शब्द से सबके रक्षक श्रेष्ठ स्वभाव वाले ज्ञानियों का ग्रहण होता है। क्योंकि जैसी रक्षा मनुष्यों की सुशिक्षा और विद्या से ही हो सकती है। वैसी किसी दूसरे प्रकार से नहीं। इसलिए जो विद्वान लोग मनुष्यों को ज्ञान-चक्षु देकर उनके अविधारूपी अन्धकार के नाश करने वाले है, उनको पितर कहते हैं। उनके सत्कार के लिए मनुष्य मात्र को ईश्वर की यह आज्ञा है। कि वे इन आते हुए पितर लोगों को देखकर अभ्युत्थान अर्थात् उठ के प्रातिपूर्वक कहे कि आइये-बैठिये, कुछ जलपान कीजिए और खाने-पीने की आज्ञा दीजिए। पश्चात् जो-जो बाते उपदेश करने योग्य है सो-सो प्रीतिपूर्वक समझाइये कि जिससे हम लोग भी सत्य विद्या युक्त हो के सब मनुष्यों के पितर कहावें।

विद्वानों के दो मार्ग होते हैं-एक देवयान दूसरा पितृयान। अर्थात् जो विद्या मार्ग है वह देवयान और जो कार्मोपासना मार्ग है वह पितृयान कहलाता है। सब लोग दोनों प्रकार के पुरुषार्थ को सदा करते रहें। जो विद्वान लोग कनिष्ट मध्यम और उत्तम चन्द्रमा के समान सब प्रजाओं को आनन्द कराने वाले प्राण विद्या-निधान शत्रुरहित अर्थात् सबके प्रिय पक्षपात छोड़ के सत्य मार्ग में चलने वाले तथा जो कि ऋतु अर्थात् ब्रह्म यतार्थ धर्म और सत्य विद्या के जानने वाले है वे पितर लोग युद्धादि व्यवहारों में हमारे साथ होके अथवा उनकी विद्या दे के हमारी रक्षा करें।

जो चौबीस वर्ष ब्रह्मच्चर्यश्रम से विद्या पढ़के सबको पढ़ाते है उन पितरों को हमारा नमस्कार है। जो चवालीस वर्ष पर्यन्न ब्रह्मचर्याश्रम से वेदादि विधाओं को पढ़ के सबके उपकारी और अमृतरूप ज्ञान के देने वाले होते हैं। जो अड़तालीस वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रियता के साथ सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़के हस्तक्रियाओं से भी सब विद्या के दृष्टान्त साक्षात देख के दिखलाते और जो सबके सुखी होने के लिए सदा प्रयत्न करते रहते है उनका मान भी सब लोगों को करना उचित है।

(पुनन्तु मा पिता महाः) जो पितर लोग शान्तामा और दयालु है वे मुझको विद्या दान से पवित्र करें। इसी प्रकार पितामह और प्रपितामह भी मुझको अपनी उत्तम विद्या पढ़ा के पवित्र करें। इसलिए उनकी शिक्षा को सुन के ब्रह्मचर्य धारण करने से सौ वर्ष पर्यन्त आनन्दयुक्त उमर होती रहे। तथा जहाँ कहीं अमावस्या में पितृयज्ञ करना लिखा है वहाँ भी इसी अभिप्राय से है कि जो कदाचित नित्य उनकी सेवा न कर सके तो महीने-महीने अर्थात् अमावस्या में मासेष्टि होती है, उसमें उन लोगों को बुलाकर अवश्य सत्कार करें।

- वैदिक प्रचारक, गढ़निवास मोहकमपुर, देहरादूर, उत्तराखण्ड, मो. 9411512019

નમસ્તે

રમેશ મહેતા ૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯ - ૯૩૨૭૦૨૬૯૭૦

નમસ્તેનો અર્થ છે "હું તમને માન આપું છું", અને નમસ્કારનો અર્થ છે 'માન કરવું'. કાર શબ્દનો પૂર્તિ માટે લગાવવામાં આવે છે અને જો નમસ્કારથી કોઈ ભાવની અભિવ્યક્તિ થઈ શકતી હોય તો માત્ર એટલી કે નમસ્તે કર્યા કરો અથવા નમસ્તે કરવા જોઈએ. કોઈનું અભિવાદન કરતી વખતે એના પ્રત્યે માન પ્રગટ ન કરતા એને એવો આદેશ આપવો કે નમસ્તે કરો અથવા એમ કહેવું કે નમસ્તે કરવા જોઈએ – એ ક્યાંની બુદ્ધિમાની છે? આ જ કારણ છે કે પ્રાચીન ઈતિહાસ અને સમસ્ત વૈદિક ગ્રંથ તથા ભારતીય પરિવેશમાં નમસ્તેનો બહોળો ઉપયોગ જોવા મળે છે.

અભિવાદનમાં શ્રેષ્ઠતમ 'નમસ્તે'

'નમસ્તે' શબ્દ વૈદિક છે. વૈદિક હોવાને કારણે યૌગિક પણ છે. યૌગિક ક્યારેય રુઢિ-અર્થક ન હોઈ શકે, એટલે એના વિભિન્ન અર્થ વિભિન્ન પરિસ્થિતિમાં કરવામાં આવે છે, એના અર્થ સાગર્ભિત અને વિશેષ છે.

'નમસ્તે' આ શબ્દમાં બે પદ છે – 'નમઃ' અને 'તે'. તમારી સામે માથું નમાવું છું, નમન કરું છું – આવો સુંદર અર્થ છે આનો. વેદમાં તો પરમપિતા પરમાત્માને પણ નમસ્તે કહ્યા છે યથા – *'નમો બ્રહ્મણે નમસ્તે'*. બીજા શ્લોકોમાં *'નમસ્તે' સતે તે જગત્કારણાય.* દેવી-દેવાતાઓને પણ નમસ્તે કહ્યા છે. જેમ કે *'ભગવતી ભારતી દેવી નમસ્તે'*. વેદો, બ્રાહ્મણ ગ્રંથો, આરણ્યકો, ઉપનિષદો અને સ્મૃતિ-ગ્રંથોમાં 'નમસ્તે' વારંવાર આવે છે. એટલું જ નહીં વેદમાં તો 'નમસ્તે સૂકત' પણ છે. આ શબ્દ વૈદિક આર્ય સાહિત્ય ઉપરાંત લૌકિક ગ્રંથો – રામાયણ, મહાભારત, ગીતા, પુરાણ આદિ સંસ્કૃતના અન્ય કાવ્યો અને નાટકોમાં આવે છે. શિકાગોમાં 'વિશ્વ ધર્મ સમ્મેલનમાં' બધાં વિદ્વાનો પરસ્પર 'નમસ્તે' કહીને જ એકબીજાનું અભિવાદન કરે છે. આર્યસમાજના મહાવિદ્વાન્ પંડિત અયોધ્યા પ્રસાદજીએ વિનમ્રતાપૂર્વક 'નમસ્તે' કર્યા તો બધાએ એક સ્વરમાં પંડિતજીને કહ્યું કે - '"please, explain in english about Namaste"' પ્રત્યુત્તરમાં પંડિતજીએ કહ્યું કે 'with all powers of my hand, with all powers of my heart and with all powers of my head, I pay respect to you.

'નમસ્તે'ની અનુશાસન શીલતા

સામાન્યરીતે જોવા મળે છે કે વિદ્યાર્થી પોતાના શિક્ષક સામે કે પછી વડીલો અથવા વિદ્વાનો સામે હાથોથી કોઈજાતની પ્રતિક્રિયા કર્યા વિના, ક્યારેક હાથ ઉપર કરીને તો ક્યારેક માત્ર મ્હોંએથી જ બોલીને નમસ્તે કહીને અભિવાદન કરે છે, આ યોગ્ય નથી. 'નમસ્તે' શબ્દનું પોતાનું એક અનુશાસન છે. નમસ્તે કહેવા પહેલા બે હાથ હૃદય સાથે રાખી, જોડીને એમની સામે માથું નમાવવું જોઈએ. આવી રીતે હાથ, હાથ, હૃદય અને માથું ત્રણે ભેગા થાય ત્યારે નમસ્તે ક્રિયા પુરી થાય છે. અને તો જ આયુ, વિદ્યા, યશ અને બળની વૃદ્ધિ થાય. દ્રષ્ટવ્ય છે – *'અભીવાદનશીલસ્ય નિત્યં વૃદ્ધોપસેવિનઃ। ચત્વારિ તસ્ય જિજ્ઞાસમાનાનાં પ્રમાણં પરમં શ્રુતિ।।'* (મનુ). વેદોની રક્ષા માટે સમસ્ત માનવજાતે અભિવાદનમાં નમસ્તે કહેવું જોઈએ. આનાથી આપણી સભ્યતા અને સંસ્કૃતિની એક ઝલક સહસા સામે આવી જાય છે.

નમસ્તે શબ્દનો પરિચય:-

નમસ્તે કહીને ભારતીય મહાદ્વીપમાં અભિવાદન કરવાનું ચલણ પ્રચલિત છે. એનો પ્રયોગ કોઈને મળીએ અથવા વિદાય લઈએ ત્યારે કરવામાં આવે છે. નમસ્તે કરતી સમયે વ્યક્તિની પીઠ આગળની તરફ નમેલી, છાતીની મધ્યમાં હાથ આંગળીઓ સહીત આકાશની દિશામાં રહે તે રીતે જોડેલા હોય છે. આ મુદ્રા સાથે એ વ્યક્તિ નમસ્તે શબ્દ બોલીને અભિવાદન કરે છે.

જાપાની રીત પ્રમાણે સ્પર્શ કર્યા વિના નમીને અભિવાદન કરવું, લોકપ્રિય પ્રકાર હોવા છતાં, આધ્યાત્મિક દૃષ્ટિથી આ અભિવાદન અન્ય પ્રકારોથી અલગ છે.

નમસ્તેનો અર્થ – નમસ્કાર સંસ્કૃત શબ્દ છે જે સંસ્કૃતના *નમઃ* શબ્દ પરથી લેવામાં આવ્યો છે, એનો અર્થ છે પ્રણામ કરવા. નમસ્તે કરતી સમયે એક વ્યક્તિનો આત્મા સામેની વ્યક્તિના આત્માનું અભિવાદન કરીને નમસ્તે કરે છે.

નમસ્તે કરવાના આધ્યાત્મિક લાભ:-

નમસ્તે કરવાથી આધ્યાત્મિક રુપે અત્યન્ત લાભપ્રદ અને સાત્વિક પદ્ધતિ છે. નમસ્તે અર્થાત સામેની વ્યક્તિમાં દૈવી રુપના દર્શન કરવા, આનાથી આધ્યાત્મિક શક્તિની વૃદ્ધિ થાય છે અને દૈવી ચૈતન્યને આકર્ષે છે. જો નમસ્તે આવા આધ્યાત્મિક ભાવથી કરવામાં આવે તો આપણે સામેની વ્યક્તિના આત્માને નમસ્તે કરીએ છીએ. આનાથી આપણામાં કૃતજ્ઞતા અને સમર્પણની ભાવનાા જાગૃત થાય છે. આધ્યાત્મિક વિકાસમાં સહાયતા મળે છે.

નમસ્તે કરતી સમયે આપણામાં એવી ભાવના આવી છે કે તમે અમારા કરતા શ્રેષ્ઠ છો, હું તમારે અધીન છું. તો આપણો અહંકાર ઓછો થાય છે અને વિનમ્રતાની ભાવના જાગે છે.

ઉપર બતાવ્યા પ્રમાણેની મુદ્રામાં નમસ્તે કરવાથી બે વ્યક્તિઓ વચ્ચે સૂક્ષ્મ-ઊર્જાનો પ્રવાહ સુગમ બને છે. અભિવાદનની આ પદ્ધતિમા શારીરિક સમ્પર્ક ન થવાને કારણે અન્ય વ્યક્તિની નકારાત્મક રુપથી પ્રભાવિત કરવાવાળી ઊર્જાની અસર ઓછી થઈ જાય છે.

નમસ્તે કરતી સમયે આંખો બંધ રાખવી. કોઈ વ્યક્તિને નમસ્તે કરતી વેળાએ આંખો બંધ રાખવાથી આપણને આપણા અંતઃકરણમાં ઝાંખવાનો તથા સ્વયંમાં ઈશ્વરના સ્વરુપ જોવાનો અને સામેની વ્યક્તિની અંદરના આત્મા તરફ ધ્યાન કેન્દ્રિત કરવું સરળ બની જાય છે.

નમસ્તે કરતી સમયે હાથમાં કોઈ વસ્તુ ન રાખવી જોઈએ. હાથમાં વસ્તુ રાખવાથી આંગળીઓનો અગ્રભાગ સીધો નથી રહેતો. અને મુદ્રા યોગ્ય અવસ્થામાં નથી રહેતી. જાણે-અજાણ્યે સામેની વ્યક્તિ તરફ તિરસ્કારપૂર્વક વર્તતા હોઈએ એવું લાગે છે.

અભિવાદનના બધા પ્રકારોમાં નમસ્તેને 'Spiritual Science Research Foundation' સર્વાધિક સાત્વિક અભિવાદનની વિધિ કહીને જ્યાં સુધી સંભવ હોય ત્યાં સુધી વ્યવહારમાં લાવવાનો અનુરોધ કરે છે.

દુર્ભાગ્યે વર્તમાનમાં નમસ્તેના સ્થાને પરસ્પર પોત-પોતાના ઈષ્ટ દેવતાની જય બોલવાની પ્રથા નો પ્રચાર થતો જોવા મળે છે અને દિવસે દિવસે એમાં વૃદ્ધિ થતી જઈ રહી છે.

આપણાથી વયમાં કે વિદ્યામાં વૃદ્ધ વ્યક્તિના પગે શા માટે પડવું જોઈએ?

આપણી સનાતન સંસ્કૃતિમાં વડીલોને પગે લાગીને આશીર્વાદ લેવામાં આવે છે. વાસ્તવમાં આ વયોવૃદ્ધ કે જ્ઞાનવૃદ્ધ વ્યક્તિએ કરેલા ઉપકારોના પ્રતિકારમાં આપણા સમર્પણની અભિવ્યક્તિ છે. સારી ભાવનાથી કરેલા સમ્માનના બદલામાં મોટા લોકો આશીર્વાદ આપે છે જેની એક સકારાત્મક ઊર્જા હોય છે.

આદરના પ્રકાર નિમ્નાનુસાર છેઃ-

૧. પ્રત્યુત્થાનઃ કોઈના સ્વાગત માટે ઊભા થવું.
૨. નમસ્તે : હાથ જોડીને સત્કાર કરવો.
૩. ઉપસંગ્રહણઃ વડીલો, શિક્ષકો, વિદ્વાનોને પગે લાગવું
૪. સાષ્ટાંગઃ પગ, ઘુંટણ, પેટ, માથું અને હાથના આધારે જમીન પર પુરા સૂઈ જઈને સમ્માન આપવું.
૫. પ્રત્યાભિવાદનઃ અભિનન્દનનો અભિનન્દનથી જવાબ આપવો.

દુર્ભાગ્યે આપણી ઉપર પશ્ચિમી સંસ્કૃતિ હાવી થતી જઈ રહી છે અને આપણે નમસ્તે, પ્રણામ આદિ કહેવું ભૂલતા જઈ રહ્યા છીએ એની જગ્યાએ હા...ય, હે..લો, ગુડમોર્નિંગ કે ગુડનાઈટ જેવા શબ્દોએ સ્થાન લઈ લીધું છે. જેના અર્થ કે અનર્થ વિષે કંઈ જાણતા જ નથી.

सामाजिक विचारधारा

'' वैदिक धर्म ने मानव के व्यक्तित्व विकास के लिए जहाँ जीवन को चार आश्रमों में विभक्त किया है, वहाँ सामाजिक जीवन के विकास के लिए उसे चार वर्णों में विभक्त किया है। यदि एक वाक्य में कहना हो तो यह कहा जा सकता है कि 'वर्ण और आश्रम' ही वैदिक समाज का मुख्य आधार है। परन्तु आधुनिक हिन्दू समाज में वर्ण और आश्रम के नाम पर जैसी अव्यवस्था फैली हुई है, आर्य समाज उसका समर्थक नहीं है।'' - चयनिका, पृष्ठ 62

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

समाचार दर्पण

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय में इस वर्ष के नव सत्र में प्रविष्ट हुए नये ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार मुख्य यज्ञशाला में आयोजित हुआ। यह संस्कार गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें भारत के 13 प्रांतों एवं नेपाल से आये इन ब्रहाचारियों ने वैदिक संस्कृति के संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए संकल्प लिया। इस अवसर पर स्थानीय ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार, कार्यालय संचालक श्री रमेश मेहता, स्वामी नवीनानन्द जी, टंकारा ग्राम के पंचायत प्रमुख एवम् सभी महाविद्यालय के अध्यापकगण उपस्थित थे। वेदारंभ संस्कार में जब छात्रों ने उद्घोष किया '' जीवपुत्रो मम आचार्य:'' अर्थात् मेरा आचार्य जीवित पुत्र हो, इस कथन से दिशायें भी स्तब्ध हो गईं प्रतीत हो रही थी। यज्ञ स्थल पर उपस्थित सभी महानुभाव भावुक हो उठे और विशेषकर उपस्थित जनसमूह में आयी माताओं की अश्रुधारा बह उठी। जब इस तरह के छात्र आर्ष गुरूकुलों से निकलकर वैदिक संस्कृति के अुनसार अपने जीवन को बढ़ाते हुए आगे बढ़ेंगे तो निश्चित ही वैदिक संस्कृति का संरक्षण ही नहीं होगा अपितु वेद के प्रशंसित जीवन को जीने वाले नागरिक भी होंगे।

आप सभी की जानकारी के लिए टंकारा स्थित इस महाविद्यालय में जहां महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित परीक्षाओं में प्रविष्ट छात्र, ब्रह्मचारी तैयार किये जाते हैं। वहीं बाल्यकाल से ही वेद प्रचार एवम् कर्म काण्ड के लिए वैदिक विद्वान, पुरोहित आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। अन्त में आचार्य श्री द्वारा आर्शीवचन देते हुए नये प्रविष्ट ब्रह्मचारियों को कहा कि अपने जीवन में स्वाध्याय, सहनशीलता एवम् सेवा तीन बातों का अवश्य ध्यान रखें। आर्ष गुरुकुल पद्धति में अनुशासित जीवन जीने की कला जो सिखाई जाती है उसे हमेशा तन्मयता से ग्रहण करें।

निमन्त्रण

मानव सेवा प्रतिष्ठान गत 17 वर्षो से विभिन्न गुरुकुलों, विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने तथा वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसारार्थ जीवनदानी, विद्वान, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करने के कार्य में संलग्न है। उसी श्रृंखला में इस वर्ष भी यह अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह दिनांक 25 अक्टूबर, 2015 को दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशव पुरम, नई दिल्ली-110035 में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद से प्रात: 8.0 बजे से 1.00 बजे तक सम्पन्न होगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाये। ❑❑❑

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ एवं वैदिक साहित्य केन्द्र लखनऊ व बरेली के सम्मिलित सहयोग से लखनऊ नगर के मोतीमहल लान (निकट स्टेडियम) में दिनांक 01.10.2015 से 11.10.2015 तक, गोरखपुर नगर के गोलघर स्थान में दिनांक 23.10.2015 से 01.11.2015 तक तथा फैजाबाद नगर के जी.आई.सी. मैदान में दिनांक 01.11.2015 से 06.11.2015 तक आयोजित होने वाले 'राष्ट्रीय पुस्तक मेले' में वैदिक साहित्य का स्टाल लगाया जा रहा है जिसमें वैदिक साहित्य के प्रमुख प्रकाशकों की उच्च कोटि की पुस्तकें उपलब्ध होगी।

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव निमन्त्रण

विश्वविख्यात झीलों की नगरी उदयपुर, जहाँ देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों का ताँता लगा रहता है। इसी रमणीय नगरी में आध्यात्मिक ऊर्जा का स्त्रोत नवलखा महल, जहाँ युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया था। इस नगरी में आयोज्य 18वें भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव। 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2015। के पावन अवसर पर विश्वभर के भाई-बहिन आमंत्रित हैं। आप, अनेकानेक, संन्यासीवृन्द, वेद-प्रवक्ताओं व आर्य नेतृत्व की उपस्थिति से शोभायमान इस महोत्सव में पधारने हेतु अभी से अपना मानस बना, रिजर्वेशन आदि करा लें। हमें सूचित करें।

निवेदक-**श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर**

सम्पर्क सूत्र-0294-2417694, 09829063110

महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज, रूड़की हरिद्वार उत्तराखण्ड में श्री लोमान्य गंगाधर तिलक व श्री चन्द्रशेखर आजाद के जन्मदिवस पर श्री सत्यपाल सिंह पूर्व मन्त्री ने उनके जीवन चरित्र और किस प्रकार अपने बलिदान से देश को स्वतन्त्र करवाया। इस महास्वातिक यज्ञ के मुख्य यजमान, तेजपाल सिंह आर्य। श्री वेद वाचस्पति जीयज्ञ के ब्रह्म रहे।

पंजाब में 'वैदिक प्रचार सप्ताह'

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब द्वारा 'वेद प्रचार सप्ताह' मनाया गया। जिसका शुभारम्भ बी.बी. के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर की आर्य युवती सभा एवं स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र के सदस्यों द्वारा ऐतिहासिक आर्यसमाज, लोहगढ़, अमृतसर में 'वैदिक हवन यज्ञ' से किया गया। इस आयोजन में प्रो. डॉ. हरमहिन्द्र सिंह बेदी मुख्य वक्ता के रूप में पधारे। श्रीमती कामरा जी ने बताया कि श्री पूनम सूरी जी के आशीर्वाद से सभी संस्थाओं में 'आर्य युवा समाज' की स्थापना हो चुकी है। जिसके माध्यम से युवा पीढ़ी में ''नैतिक मूलयों' का प्रसार होगा'। मुक्ता वक्ता प्रो. हरमोहिन्द्र सिंह बेदी जी ने 'वैश्वीरकरण में वेदों का महत्त्व' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

डी.ए.वी. के करणवीर राष्ट्रीय कैम्प में

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सी.सै. मॉडल स्कूल छात्र मा. करणवीर सिंह द्वारा तीरंदाजी में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए इंडिया तीरंदाजी कैम्प में अपना चयन सुनिश्चित किया। प्राचार्या श्रीमती कुसुम खुंगर व तीरंदाजी के इंडिया कोच व स्कूल कोच रवि कुमार ने बताया कि सब जूनियर कम्पांऊड आर्चरी में मा. करनवीर सिंह ने नैशनल रैंकिग में पाँचवा रैंक प्राप्त किया। उक्त प्रतियोगिता यमुना स्पोर्टस कम्पलैक्स नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

डी.ए.वी. चेन्नई में वेद प्रचार सप्ताह

डी.ए.वी. वेलचेरी चेन्नई के प्रांगण में श्रावण मास में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय में चहुँ दिशाओं से उच्चरित 'ओ३म्' ध्वनि, हवन एवं मन्त्रोच्चारण के साथ हुआ। यज्ञ का आरंभ प्रधानाचार्या श्रीमती मीनू अग्रवाल के कर कमलों द्वारा हुआ। इस महान यज्ञ में आहुति देने हेतु शिक्षकों छात्रों एवं अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया था। समारोह के प्रथम चरण में छात्रों द्वारा चारों वेदों के वेद-पाठ की अनुपम प्रस्तुति ने जनमानस के मन और मस्तिष्क को झंकृत कर दिया। द्वितीय चरण योगेश्वर श्री कृष्ण के अलौकिक रूप सौंन्दर्य की छटा बिखरता हुआ प्रतीत हुआ। अगली कड़ी में भगवद्गीता में वर्णित अध्याय 15 का सस्वर वाचन रहा। कार्यक्रम के अंतिम चरण में विद्यालय की संस्कृत शिक्षिका एवं विद्यार्थियों ने वैदिकधर्म से संबंधित कथा वाचन बड़े ही हृदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया।

डी.ए.वी. जम्मू की छात्राओं ने सीमा पर जवानों को बांधी राखी

महाराजा हरिसिंह एग्रीकल्चर कालिजियेट स्कूल नागबनी की ओर से रक्षाबन्धन के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आर्य युवा समाज के बैनर तले नागबनी स्कूल से एक रैली निकाली गई। छात्राएं पलौडा स्थित बी.एस.एफ.कैंप में पहुंची, जहां पर उन्होंने सीमा सुरक्षा बल के डी.आई.जी. बी.एस.कसाना तथा अन्य अधिकारियों व जवानों को राखी बांधी। इसके उपरांत उन्होंने जम्मू मैडीकल कॉलेज अस्पताल, जम्मू में पहुंच रक्षाबन्धन मनाया। स्कूल प्रिंसीपल अलोक बेताब ने कहा कि भाई बहन के प्रेम के प्रतीक का पर्व रक्षाबन्धन की स्कूल की छात्रों ने हर्षोल्लास के साथ मनाया।

हि.प्र. में वैदिक चेतना शिविर

डी.ए.वी. विद्यालय देहरा के प्रागंण में त्रिदिवसीय वैदिक चेतना शिविर का शुभारम्भ हुआ जिसके मुख्यातिथि ढलियारा के सेवानिवृत प्रधानाचार्य श्री बी.एस. पठानिया थे। मुख्यातिथि महोदय ने अपने चरित्र के निर्माण से सम्बन्धित विचारों से विद्यार्थियों को अवगत करवाया। भजन गायक श्री सुरेश कुमार एवं सोनू कुमार ने अपने भजनों से समस्त वातावरण को गुँजायमान किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी, संस्कृत एवं धर्म शिक्षा विषयों पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक मंचन की प्रस्तुति दी गई जिसमें सभी प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

डी.ए.वी. कोटा द्वारा वृक्षारोपण

हम प्रकृति का लगातार दोहन कर उससे जीवनोपयोगी पदार्थ ले रहे हैं, परन्तु पुर्नभरण कर उसे कुछ न कुछ लौटाने के प्रति इतने सजग नहीं है। उक्त विचार राजस्थान प्रान्त के लोकायुक्त सज्जनसिंह कोठारी ने आज **डी.ए.वी. स्कूल तलवंडी** में वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किये।

उपनयन संस्कार

वैदिक वीरांगना दल द्वारा 108 कन्याओं का उपनयन संस्कार आयोजित किया गया। अनामिका शर्मा ने बताया कि राजस्थान के विभिन्न जिलां की बालिकाएं व महिलाएं उक्त समारोह में शामिल हुई। इस अवसर पर वैदिक वीरांगना दल की संरक्षक श्रीमती दुर्गा शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि दुनिया उन लोगों का साथ देती है, जो अहसान मानना जानते है। एहसान मानना जिनकी आदत बन जाती है, उनके दोस्तों की संख्या लगातार बढ़ती है।

उपदेशक प्रशिक्षण शिविर

देश विदेश में धर्म प्रचार हेतु पुरोहित एवम् व्याख्यान के विशिष्ट प्रशिक्षण के निमित्त शास्त्री या उसके समकक्ष योग्यता वाले युवाओं के लिए त्रिदिवसीय शिविर आयोजित है। शास्त्री या उसके समकक्ष डिग्री आपेक्षित नहीं है। यदि आप स्वयं को इसके उपयुक्त समझते हैं और इस क्षेत्र में रूचि रखते हैं तो सम्पर्क करें। अभी प्रारम्भिक स्तर पर त्रिदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसके पश्चात् इसको विस्तार दिया जाएगा।

प्रशिक्षण विषय: (1) वैदिक दर्शन एवम् सिद्धान्त (2) कर्मकाण्डों की प्रक्रिया और उनका वैज्ञानिक महत्व (3) व्याख्यान कला (4) लोक व्यवहार।

प्रशिक्षण देने के लिए: डॉ. धर्मवीर, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. विनय विद्यालंकार तथा अन्य मूर्धन्य आर्य विद्वान इसमें समय-समय पर उपस्थित रहेंगे।

निवास व भोजन का समुचित प्रबन्ध रहेगा। आपसे निवेदन है कि इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अपना, नाम, पता, फोन नम्बर, ईमेल आदि श्री सुरेन्द्र प्रताप, फोन-46678389, 9953782813 या श्री राजीव चौधरी, मो. 9810014097 को पंजीकृत करायें। यथा समय आपको तिथियों की सूचना दी जाएगी।

निवेदक: आर्य समाज कैलाश ग्रेटर कैलाश-1, बी-31/सी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-48। फोन: 011-29240672, 46678389, ई.मेल:- samajarya@yahoo.in, Web.: www.aryasamajgk1.org

रक्षाबन्धन पर्व

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना ने दयानन्द हाल में रक्षाबन्धन पर्व मनाया। गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने सबको रक्षाबन्धन पर्व की बधाई देते हुए कहा कि पर्व हमारी प्राचीन संस्कृति को जीवित रखते हैं। हमारा यह गुरुकुल शिक्षा और विद्या दोनों का समन्वय है। यहाँ शिक्षा और विद्या दोनों के द्वारा ब्र. के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास पर बल देते हैं। सभा में उपस्थित श्री विजय स्याल, कोषाध्यक्ष श्री विजय गाँधी, श्री मोहन लाल कालड़ा, श्री आर.बी. खन्ना, श्री जगजीव बस्सी तथा अन्य गणमान्य आर्य बन्धुओं ने पुष्पमालाओं से आचार्य राजू जी वैज्ञानिक का स्वागत किया। उन्होंने पंजाब बोर्ड की दसवी की परीक्षा का परिणाम बताया तथा यह भी बताया कि गुरुकुल की दो ब्र. ने पंजाब की बोर्ड की परीक्षा में पंजाब राज्य की मैरिट सूची में स्थान प्राप्त किया। गुरुकुल की सबसे छोटी ब्र. प्रियांशी ने आचार्य राजू जी वैज्ञानिक, श्री आर.बी.जी. खन्ना और श्री मोहन लाल जी कालड़ा को राखी बाँधी। दसवीं कक्षा की ब्र. निधि ने मंच संचालन किया। ब्र. ने भाषण, भजन, गीत एवं योगासनों के द्वारा सभा को मन्त्र मुग्ध कर दिया। आचार्य राजू जी वैज्ञानिक ने रक्षाबन्धन के पर्व पर प्रकाश डाला और बताया कि यह पर्व निर्मल, निश्चल, निष्कपट व संकल्प का पर्व है। कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल एवं वरिष्ठ उपप्रधान श्री राजेन्द्रपाल जी स्याल की ओर से गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने अभिभावकों का धन्यवाद किया।

वैदिक शोध संगोष्ठी सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के 121 वें जन्मदिवस के अवसर पर सम्पन्न हुई गोष्ठी का विषय था–'वैदिक अध्यात्म विज्ञान की सार्वभौमिकता।' गोष्ठी में समागत विद्वानों का प्रभातश्रम की वैदिक परम्परानुसार शंखवादन, तिलक-चर्चन, श्रीफल एवं फूलों की माला से विद्वानों का स्वागत किया गया। समागत विद्वानों में गोष्ठी के समुद्घाटन सत्र के अध्यक्ष महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्याप्रतिष्ठान, उज्जैन के पूर्व सचिव श्री प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय तथा संयोजक प्रो. सोमदेव शतांशु थे। शोधपत्र वाचकों में प्रो. रमेश भारद्वाज, प्रो. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. रामसुमेरू यादव, डॉ. विनोद शर्मा, डॉ. जगमोहन, डॉ. सत्यकेतु, डॉ. वेदव्रत, डॉ. सत्यपाल सिंह प्रमुख थे।

श्रावणी महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज आर्ष गुरुकुल नोएडा सेक्टर-33 में श्रावणी महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। भजनोपदेशक ऋषि राघव स्नातक आर्ष गुरुकुल नोएडा द्वारा भजनों का पान कराया गया। चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ का शुभारम्भ हुआ जिसके ब्रह्म आचार्य जयेन्द्र जी तथा मुख्या यजमान माता ओमवती जी रही। वेद पाठ गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋत्विक श्रीमती गायत्री मीणा एवं मोहन प्रसाद उपाध्याय रहे। गोष्ठी का विषय ''समस्त ज्ञान विज्ञानं का आधार वेद'' था जिसकी अध्यक्षता डॉ. जयेन्द्र जी ने की और मुख्या अथिति के रूप में ठाकुर विक्रम सिंह जी, मुख्या वक्ता के रूप में डॉ. वेदपाल जी, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. नरेश विद्यालंकार, डॉ. राजकिशोर जी तथा हरेन्द्र शास्त्री जी रहे। रविवार समापन्न दिवस का शुभारम्भ चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति तथा नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों के उपनयन संस्कार द्वारा हुआ जिसमे यज्ञ के ब्रह्म डॉ. आचार्य जी द्वारा उपनयन के विषय में बताया यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् दूर-सुदूर से पधारें अनेक श्रद्धालुओं ने इस गुरुकुल की उन्नति के लिए अपने सामर्थ्य से दान दिया। श्रावणी महोत्सव के समापन समारोह के अवसर पर भी गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय भारतीय संस्कृति के उत्थान में आर्य समाज का योगदान की अध्यक्षता श्री एच.पी.परिहार, मुख्या अतिथि डॉ. योगानन्द शास्त्री व जिलाधिकारी श्री एन.के.सिंह थे। गोष्ठी का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित करके किया गया।

चिकित्सा जांच सम्पन्न

छोटू सिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष, आर्य कन्या विद्यालय समिति के 95वें जन्मदिवस के अवसर पर आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग के तत्वावधान में 70वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर का जिला एवं सत्र न्यायधीश डॉ. वी.के. माथुर ने मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रमोद मलिक एडवोकेट जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर, अनिल वशिष्ठ अध्यक्ष, जिला अभिभावक संघ, अलवर एवं जितेन्द्र शर्मा, सचिव, जिला अभिभावक संघ के साथ रिबन काटकर उद्घाटन किया। शिविर में लगभग 200 अभिभावकों की नि:शुल्क जांच हुई। हिमोग्लोबिन, ब्लड प्रेशर, शुगर आदि की नि:शुल्क जांच की गई तथा रोगियों को उपचार आयुर्वेदिक स्टोर्स के बीबी गौतम के सहयोग से आवश्यकतानुसार नि:शुल्क दवाईयां दी गई।

खुशहाली के पांच सूत्र

❐ रोशन लाल गुप्ता

1. ईश्वर समर्पणः -ईश्वर को सदा अपने निकट माने, वह हमारा शत्रु नहीं है बल्कि हमारा माता-पिता है। वह सदा हमारा भला चाहता है। हमे अच्छा बनाना चाहता है। इसलिए अच्छे बने, सच्चे बने और ईश्वर की कृपा के पात्र बने। धन, रूप, गुण, बल आदि का देने वाला ईश्वर ही है। उससे प्रार्थना करे, उसका चिंतन करें, उसका धन्यवाद करे। ईश्वर मे विश्वास करें, कार्य पूरी मेहनत, ईमानदारी और बुद्धिमता से करें और परिणाम ईश्वर पर छोड़ दें। ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है। सुबह शाम शांतचित बैठकर ध्यान करे। अच्छी- अच्छी धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करें। अपने ऋषियों की आज्ञाओं का पालन करें। धार्मिक बनें।

2. प्रकृति से संतुलनः-परमात्मा की बनाई जिस दुनिया में हम रहते है, जिससे सभी प्रकार के पदार्थ हम प्राप्त करते है। हवा, पानी, अन्न, फल, फूल आदि का उपभोग करते है। उसी को मलमूत्र का त्याग करके, श्वास-प्रश्वास की क्रिया, विभिन्न वस्तुओं के गलने, सड़ने, धूम्रपान, वाहनों, कल कारखानों से निरंतर निकलने वालें धुए तथा दुर्गन्ध से प्रदूषित करते जा रहे है। खाद्यान्नों, सब्जियों, फलों आदि का उत्पादन अधिकाधिक करने के लिए रासायनिक खादों, और कीटनाशक दवाओं का अंधांधुध प्रयोग किया जा रहा है। कल कारखानों, वाहनों, रासायनिक खादों से उत्पन्न होनेवाली महाविनाशकारी गैसों, धुए और बीमारियों ने आज तबाही मचा दी है। इस राक्षस के चंगुल में हवा, पानी, मिट्टी, ध्वनि, प्रकाश, आकाश सभी कुछ आ चुके हैं। वैज्ञानिकों को भी इस विषय पर संशय हो गया है कि ऐसी पृथ्वी पर मनुष्य नामक प्राणी भविष्य में जीवित भी रह पायेगा या नही।

इस धरती को बचाने की, जीने योग्य बनाने की जिम्मेदारी किसकी? हम सब की। इसलिए आस-पास स्वच्छता रखें गदंगी न फैलाएं। अधिक से अधिक वृक्ष लगाए। सुख साधनों का प्रयोग कम से कम करें। पर्यावरण प्रदूषण को कम करने का सबसे बड़ा साधन यज्ञ (हवन) है। यज्ञ से अनेक प्रकार की लाभकारी गैसें बहुत अधिक मात्रा में उत्पन्न होती है। जो वायु के प्रदूषण को नष्ट करके वातावरण को सुगन्धकारी व स्वस्थकारी बना देती है। हम भी यज्ञ करें, करवाए, यज्ञों में सहयोग दें। प्रकृति के मित्र बने, शत्रु नहीं।

3. माता-पिता की सेवाः- माता-पिता अपनी संतान के पालन पोषण में जो कष्ट उठाते है उसका मूल्य चुकाना असम्भव है। तथापि उनकी तृप्ति तथा सम्मान के लिए और ऋण से उऋण होने के लिए उनकी सेवा-शुश्रूषा करना हमारा परम कर्तव्य है। जो अपने अच्छे आचरण से माता-पिता को प्रसन्न रखते है वस्तुतः वही पुत्र है। प्रतिदिन अपने जीवित माता-पिता, बुजुर्गो और विद्वानों का भोजन वस्त्र आदि द्वारा यथायोग्य आदर सत्कार करने का नाम पितृयज्ञ है। उनके साथ बैठे, मीठा बोलें व सम्मान करें। भगवान राम की आज भी लोग पूजा करते है क्योंकि उन्होंने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए वनवास को सहर्ष स्वीकार कर लिया था। हम सब का भी यह कर्तव्य है कि हम अपने माता-पिता की सेवा तन मन धन से हमेशा करे।

4. अतिथि का सत्कारः- जो श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव का विद्वान सन्यासी व्यक्ति है, वही अतिथि कहलाता है। जो अपने लिए नही हमारे कल्याण के लिए हमारे घर आया है। ऐसे व्यक्ति के घर आने पर नमस्ते या चरण स्पर्श कर प्रणाम करे। हाथ मुख धोने व पीने के लिए जल दें। आदर से बैठाए व खान पान आदि पदार्थो से सेवा करें। सत्य उपदेश, उत्तम आचरण तथा ज्ञान विज्ञान आदि की शिक्षा लें। अपनी शंकाओं का समाधान करावें। यथाशक्ति दान दक्षिणा देकर विदा करें। इससे आपका यश चारों और फैलता है और अच्छे लोगों का आना जाना बना रहता है।

5. अन्य प्राणियों की रक्षाः- हम मनुष्य इस दुनिया में अकेले नही रहते बल्कि हमारे चारों ओर अनेक पशु, पक्षी, जीव जन्तु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारा सहयोग करते रहते है। अतः हमें भी मित्रता की भावना से उन पर दया, परोपकार व सहयोग करना चाहिए। उनके जीवन की रक्षा करनी चाहिए, जैसे गाय, कुत्ते, बिल्ली, कौआ, चिड़िया, चींटी आदि सबको भोजन देना। उनके पीने के लिए पानी की व्यवस्था करना। आप कितने भाग्यशाली है कि संसार में आपको जो उत्तम बुद्धी, मधुर वाणी और दो सुन्दर हाथ दूसरों की सेवा करने के लिए मिले है वो अन्य प्राणियों को नही मिल पाये। दुनिया में सभी खुशहाल होगें तभी तो हम भी सुख से रह पाऐंगे।

- अध्यक्ष, वेद प्रचार मण्डल, जिला महेन्द्रगढ, हरियाणा

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

चुनाव समाचार

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, आर्य समाज मस्जिद मोठ, दिल्ली

प्रधान- श्री रविदेव गुप्ता **मन्त्री-** श्री चतर सिंह नागर

कोषाध्यक्ष- श्री ओम वीर सिंह

आर्य समाज, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

प्रधान- श्रीमती कान्ता विनायक **मन्त्री-** डॉ. विनय विद्यालंकार

कोषाध्यक्ष- श्री बंसत कुमार कंसल

स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज शक्तिनगर, अमृतसर का 47वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया गया। इसकी अध्यक्षता प्रधान श्री दर्शन कुमार जी ने की। कार्यक्रम के शुभारम्भ हवन यज्ञ के ब्राह्म पं शक्ति कुमार जी में वेद मन्त्रों का आचरण करते सभी यज्ञ प्रेमियों से आहुतियां डलवाई। मुख्य वक्ता पं. महेन्द्र पाल जी आर्य विशेष रूप में पधारे। कार्यक्रम में अमृतसर की समस्त डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों के प्रिंसीपल के अलावा सभी आर्य समाजों से आएं अधिकारी तथा अमृतसर के गणमान्य व्यक्ति शामिल होकर इस कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

(पृष्ठ 1 का शेष)

लंकाधिपति रावण आर्य राज्य को निगलने को तैयार बैठे थे। रावण की सेनाएं दण्डकारण्य तक और जन-स्थान तक पहुंच चुकी थी। आर्य राज्य पर आर्य इस भीषण संकट के निवारण में दशरथ अपने-आपको असमर्थ पा रहे थे। तब मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने उस संकट के निवारण की योजना बनाई और अपनी योजना की पूर्ति के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को वैदिक धर्म और आर्य जीवन के आदर्श के रूप में सांचे में ढाल कर तैयार किया।

श्री राम शुरु से आखिर तक ऋषियों के परामर्श और उनके पथ-प्रदर्शन में जीवन-यापन करते हैं। एक तरह से वे ऋषियों की ही कृति हैं और इसीलिए ऋषियों के समक्ष वे जो ''निशिच हीन करौं महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह''-की प्रतिज्ञा करते हैं उसका पूर्णत: पालन करते हैं। हरेक तरह के पारिवारिक संकट उनके सामने आते हैं। उन्हें राजगद्दी भी छोड़नी पड़ती है और 14 वर्ष का वनवास भी स्वीकार करना पड़ता है, परन्तु जीवन की विषम से विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने सामने जो लक्ष्य निर्धारित किया था, उसे ओझल नहीं होने देते। पृथ्वी को निशिचर विहीन करने की इस योजना में वशिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज और अगस्त्य आदि सब ऋषि शामिल हैं और इन ऋषियों के आश्रम ही उस योजना के-जिसे गोपनीयता की दृष्टि से और राष्ट्रहित की दृष्टि से ''मन्त्र'' कहना चाहिए-असली सूत्रधार हैं। प्रदेश विशेष नहीं, जाति विशेष नहीं, वर्ग विशेष नहीं और वर्ण विशेष नहीं, प्रत्युत आसेतु-हिमाचल समग्र राष्ट्र की ओर जन-जन के हित की योजना बनाने वाले ऋषि 'मन्त्र द्रष्टा' नहीं तो और क्या हैं? वे सर्वथा नि:स्वार्थभाव से आर्य राज्य के विस्तार की और राष्ट्रहित की योजना बनाते हैं और अयोध्या के राजकुमार के कान में विजय का मन्त्र फूंक देते हैं।

वेद ने कहा है-**''अहं भूमिं अददाम् आर्याय''**-अर्थात् मैंने यह भूमि आर्यो को प्रदान की है। सारे संसार की भूमि की बात जाने भी दें तो भी भी आर्यावर्त की भूमि पर तो आर्यो का एकच्छत्र राज्य होना ही चाहिए। जब राम सीताहरण के पश्चात् किष्किन्धा पहुंचते है और वानराधिपति सुग्रीव के दूत बनकर महाबली हनुमान राम का परिचय पूछने जाते हैं तब राम उत्तर देते हैं-

इक्ष्वाकुणामियं भूमिः सशैलवनकानना।
तां पालयति धर्मात्मा भरतः सत्यवानृजुः॥
तस्य धर्मकृतादेशा वन्यमन्ये च पार्थिवाः।
चरामो वसुधां कृत्स्नां धर्मसन्तानमिच्छवः॥

-अर्थात् पर्वतों नदियों और वनों समेत यह सारी आर्यावर्त की भूमि इक्ष्वाकुओं की है और धर्मात्मा भरत इसके पालक हैं। हम आर्य राज्य के स्वामी उसी भरत के धर्मादेश से अपने आर्य धर्म का विस्तार करने की इच्छा से इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं। आपने ''इक्ष्वाकुणांमियम् भूमि:'' इस पर ध्यान दिया है? वही ''अहं भूमिं अददाम् आर्याय'' वाली बात है या नहीं? दोनों का अर्थ स्पष्ट है कि आर्यावर्त की भूमि आर्यो की है और उस पर उन्हीं का शासन चलना चाहिए।

यहां रावण के सम्बन्ध में भी कुछ भ्रमों का निवारण कर लेना चाहिए। राक्षस राज के नाते हम उसमें समस्त ऐबों का आरोप करते हैं परन्तु सच तो यह है कि उसका सबसे बड़ा दोष एक ही था और वह यह कि वह आर्य राज्य को समाप्त कर इस आर्यावर्त पर राक्षस राज्य स्थापित करना चाहता था। कोई भी आर्य राजा इस बात को कैसे सहन कर सकता था। रावण भी उसका असली नाम प्रतीत नहीं होता, बल्कि यह लंका की गद्दी पर बैठने वाला राजा रावण कहलाता होगा।

इस राक्षस राज्य को आर्य राष्ट्र का मित्र-राष्ट्र बनाने के लिए ही राम का यह विजय अभियान था। इस अभियान की सफलता के लिए राम ने अयोध्या की सेना का प्रयोग नहीं किया। बल्कि आन्ध्र, कर्नाटक और द्रविड़ देश के वनवासियों को अपने साथ मिलाया। अभी तक हम जिन्हें ''वानर'' कहते आये हैं, वे बन्दर नहीं थे और न ही हनुमान, सुग्रीव या जामवन्तादि की कोई पूंछ थी। वे वनों में रहने के कारण ही वानर कहलाते थे। वानर और वनवासी का एक ही अर्थ है। राम के 14 वर्ष के वनवास का अधिकतम काल इन्हीं वनवासियों से सम्पर्क साधकर उन्हें आर्य राज्य की विजय का माध्यम बनाने में व्यतीत हुआ था। बिना वनवास ग्रहण किये इन वनवासियों से सम्पर्क संभव नहीं था। इन वनवासियों को अपने साथ मिलाना राम का इतना बड़ा और महान् राष्ट्रीय कार्य था कि उसकी तुलना नहीं की जा सकती।

क्या आज भी हम नहीं देखते कि हमारे सारे समाज का सबसे उपेक्षित यह आदिवासी और वनवासी समाज है। विधर्मियों का सबसे बड़ा चारागाह यह आदिवासी समाज ही तो है। राम के बाद इन वनवासियों को अपनाने की दूरदर्शिता और किसी राजनेता ने नहीं दिखाई। इसीलिए राम की वह लंका विजय केवल सैनिक विजय नहीं थी, बल्कि राष्ट्र धर्म की सांस्कृतिक विजय भी थी, जिसमें समस्त राष्ट्र के वासियों का समान सहयोग था। इन वनवासियों को मिलाकर और नगरों तथा ग्रामों की जनता के साथ उनको एकाकार करके ही आर्य राज्य की रक्षा की जा सकती है। लंका-विजय के उदाहरण के रूप में राष्ट्र-धर्म की इस विजय के लिए सतत जागरूक रहना ही विजयदशमी का संदेश है।

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 17 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 013001010111 0898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

(पृष्ठ 2 का शेष)

मान्य प्रधानजी ने एक हजार से ऊपर उपस्थित आर्यजनों के समक्ष आचार्य देवव्रतजी के जीवन के कुछ स्वर्णिम और स्पृहणीय पक्ष रखे और बताया कि कैसे अपनी निष्ठा, कर्त्तव्य-परायणता और समर्पण के बल पर उन्होंने आर्य समाज, शिक्षा और स्वास्थ्य को लेकर एक ऐसा कार्य किया है जो सब के लिए एक मार्गदर्शन हो सकता है।

मान्य प्रधानजी ने महामहिम राज्यपाल को सम्मान-सूचक, पगड़ी, शॉल और अभिनन्दन पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया तो सारा सभागार तालियों के गड़गड़ाहट से गूँज उठा। शिक्षक दिवस के अवसर पर सभी शिक्षकों को हार्दिक बधाई देते हुए मान्य प्रधानजी ने योगेश्वर श्रीकृष्णजी का स्मरण किया और कहा कि वे अद्वितीय अध्यापक थे। डी.ए.वी. का शिक्षक कैसा होना चाहिए, इस विषय में मान्य प्रधानजी ने महात्मा हंसराज का उदाहरण दिया और कहा कि, ''सीखना मुश्किल है जुस्तजू चाहिए, सिखाना और भी मुश्किल है, खाक में मिटने की तमन्ना चाहिए।''

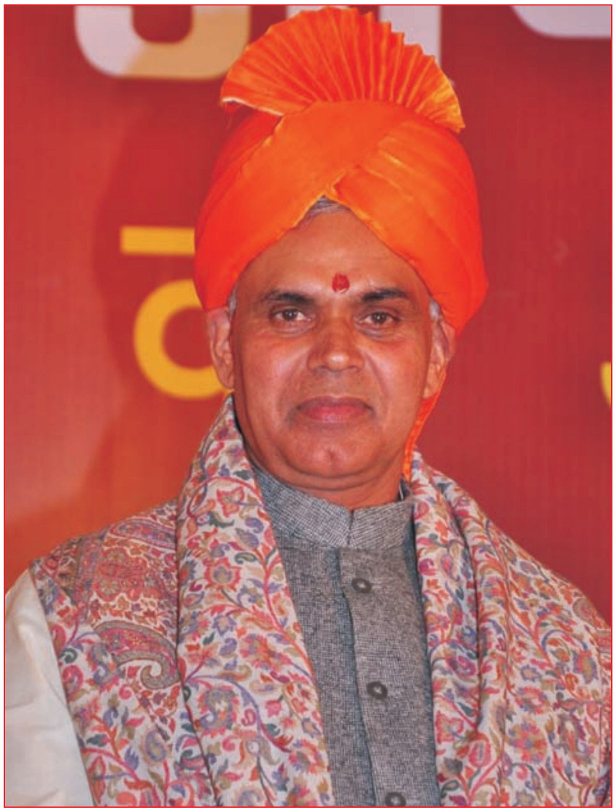

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी ने श्री पूनम सूरी जी सहित उपस्थित पदाधिकारियों एवं अन्य आर्यजनों का बहुत ही विनम्रता से अभिनन्दन किया और योगेश्वर श्रीकृष्ण के जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं दी। महामहिम ने स्वयं को डी.ए.वी. परिवार का सदस्य बताया और कहा कि इस निकटता का एकमात्र कारण डी.ए.वी. के प्रधान श्री पूनम सूरी जी हैं। डी.ए.वी. की स्थापना से जुड़े हुए महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा आनन्द स्वामी जी जैसी विभूतियों को स्मरण करते हुए महामहिम ने कहा कि आज आवश्यकता है कि हम लोग इन पूर्वजों के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करें जिन्होंने अत्यंत कठिनाइयों को सहते हुए इस विशाल आन्दोलन को अपने तप और त्याग से सिंचित किया। महामहिम ने कहा कि एक समय था जब डी.ए.वी. का शरीर तो था लेकिन आत्मा दिखाई नहीं देती थी। लोग अशांत थे, बेचैन थे, दु:खी थे, लेकिन ईश्वर की कृपा थी और ऐसे प्रशस्त व्यक्तित्व श्री पूनम सूरी सामने आए जिन्होंने अपने व्यक्तिगत कार्यो को तिलांजलि देकर अपने आपको डी.ए.वी. को समर्पित कर दिया और आज महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा आनन्द स्वामी के काल के वे दिन फिर लौट आए हैं-ये डी.ए.वी. का सौभाग्य है। महामहिम राज्यपाल ने राजभवन में आते ही यज्ञशाला बनवाकर विधिवत् रूप से यज्ञ करना आरम्भ कर दिया।

शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने विचार देते हुए महामहिम ने भारती संस्कृति की गुरु-शिष्य परम्परा का उल्लेख किया और शिक्षक को समाज, राष्ट्र और विश्व का निर्माता बताया। चीनी यात्री हेनसाँग की यात्रा का संदर्भ प्रस्तुत करते हुए महामहिम राज्यपाल ने भारतीय शिक्षा-पद्धति, यहाँ की ज्ञान-संपदा को सुरक्षित और परिवर्द्धित करने के लिए भारतीय जनमानस के समर्पण की कहानी कही और हेनसाँग के शब्दों में कहा, ''हे भारतभूमि, तूने कैसी महान विभूतियों को पैदा किया है जो केवल अपने देश के लिए नहीं अपितु विश्व के कल्याण के लिए अपने प्राण की बाजी लगा देते हैं। मैं तुझे नमन करता हूँ।''

महामहिम ने उपस्थित आर्यजनों का आह्वान किया और कहा कि सोच के साथ, विवेक के साथ, एक उद्देश्य के प्रति समर्पित हों। उन्होंने इस आयोजन के माध्यम से अभिव्यक्त अपनेपन को लेकर डी.ए.वी. और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का धन्यवाद किया और डी.ए.वी. के प्रति किसी भी प्रकार से हो सकने वाली सेवाओं का संकल्प दोहराया।

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

टंकारा समाचार अक्टूबर 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-10-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.09.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय